Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

भिक्षु वाणी

गलियार गधो घोड़ो मोल ले,
खाडेती घणो दुख पावे।
ज्यूं अविनीत ने दिख्यां दीयां पछें,
पग-पग गुर पिछतावे।।

दुष्ट प्रकृति वाले गधे या घोड़े को खरीद कर वाहक दु:खी बन जाता है। उसी प्रकार अविनीत को दीक्षित कर गुरु पग-पग पर पछताते हैं।

– आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 27 • अंक 36 • 08 जून - 14 जून 2026 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 06-06-2026 • पेज 12 • ₹ 10 रुपये

भीतर के भाव भले ही पवित्र हों, पर दुनिया केवल बाह्य भाषा और व्यवहार की कटुता देखती है: आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 10

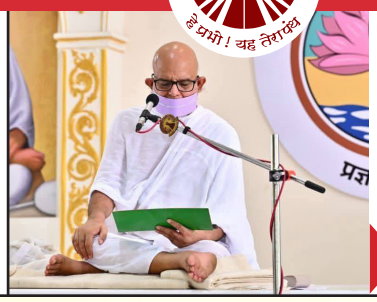

मकान, जमीन या सोना-चांदी स्वयं नहीं कराते कर्मों का बंधन, भीतर की मूर्च्छा ही है असली परिग्रह : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 12

Address Here

अभातेयुप किशोर मंडल के 21वें अधिवेशन में गूंजा गुरुदेव का पाथेय

युवा पीढ़ी अपनी शक्ति और ज्ञान का राष्ट्र व संघ हित में करें सदुपयोग : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
31 मई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में 'ज्यादा तेज न चलें' विषय पर उत्तराध्ययन सूत्र के माध्यम से पावन प्रतिबोध प्रदान किया। आचार्यश्री ने सुश्रमण चर्या की सूक्ष्मताओं को समझाते हुए विहार, गोचरी और दैनिक व्यवहार में अहिंसा व चित्त की स्थिरता बनाए रखने के कड़े सूत्र दिए।

धीमी गति और शांत भाव : ईर्या समिति का असली मर्म : आचार्य प्रवर ने पदयात्रा और अहिंसा के अंतर्संबंधों को स्पष्ट करते हुए मुख्य बिंदु रेखांकित किए।

१. तेज चलने से जीव विराधना: सामान्य परिस्थितियों में साधु का बहुत द्रुत (तेज) गति से चलना मर्यादा के अनुकूल नहीं है। तेज चलने से मार्ग के सूक्ष्म जीवों की विराधना (हिंसा) होने की संभावना बढ़ जाती है, जो साधक को 'पाप श्रमण' की श्रेणी में खड़ा कर सकती है। पदयात्रा में ईर्या समिति की जितनी श्रेष्ठ पालना पैरों से चलने में होती है, वह वाहनों के प्रयोग में कतई संभव नहीं है।

२. गुरु तुलसी का जीवंत आदर्श: शांतिदूत ने फरमाया कि परम पूज्य आचार्य श्री तुलसी विहार करते समय पूरी जागरूकता रखते थे। वे चलते समय कभी वार्तालाप नहीं करते थे और हमेशा शांत व मंद गति से कदम बढ़ाते थे। साधु की मंद गति अहिंसा, संयम और चित्त की स्थिरता में परम सहयोगी होती है।

> क्रोध में आकर बहुत बोलना और सोते हुए प्राणी को लांघकर जाना सुश्रमण चर्या के विपरीत
>
> **–आचार्यश्री महाश्रमण**

प्रमाद का त्याग और चंड वृत्ति से बचने की सीख : आगमिक गाथाओं के आलोक में पूज्य प्रवर ने साधकों को आत्म-निरीक्षण की प्रेरणा दी। (शेष पेज 9 पर)

शांत हो चुके विवाद में रस लेना और बेवजह जिद-कदाग्रह करना है 'पाप श्रमण': आचार्यश्री महाश्रमण

आचार मर्यादा, व्यवहार कुशलता और परिश्रम शीलता ही हैं न्यारा में सफलता के तीन मूल सूत्र

लाडनूं।
01 जून, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अखंड परिव्राजक आचार्य श्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में 'विवाद की उदीरणामत करो' विषय पर आगम के आलोक में गहरा व्यवहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया। आचार्यश्री ने फरमाया कि जहां सामूहिक जीवन और संघ बद्ध साधना होती है, वहां मतभेदों की संभावना रहती है; परंतु मंद कषाय और कुशल व्यवहार के बल पर ही संघ में पूर्ण शांति और समाधि बनी रह सकती है।

> थोड़ी कठिनाई सहन करके भी दूसरों को चित्त समाधि पहुँचाना ही कुशल व्यवहार है
>
> **-आचार्यश्री महाश्रमण**

शांत विवाद को उकेरना मर्यादा के विपरीत : आचार्य प्रवर ने आत्मिक समाधि और कलह-मुक्ति के सिद्धांतों को समझाते हुए मुख्य बिंदु रेखांकित किए:

१. कलह में रस लेना दोष : आगम में वर्णित पाप श्रमण के लक्षणों पर प्रहार करते हुए पूज्य प्रवर ने फरमाया कि जो व्यक्ति शांत हो चुकी बातों या पुराने विवादों को दोबारा उकेरता है, वह 'पाप श्रमण' कहलाता है। अनावश्यक जिद, कदाग्रह और कलह में अपनी बुद्धि लगाना आत्म-कल्याण के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है।

२. चित्त की समाधि स्वयं के पास : हर मनुष्य की समाधि उसके स्वयं के भीतर होती है। यदि हमारा अपना चित्त शांत और स्थिर है, तो संसार का कोई भी दूसरा व्यक्ति हमारी समाधि को भंग करने में निमित्त नहीं बन सकता।

(शेष पेज 9 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
08 जून - 14 जून 2026
हे प्रभो! यह तेरापंथ

होटल और विदेश यात्रा में भी भोजन की शुद्धता के प्रति सजग रहें जैन श्रावक, नॉनवेज-मदिरा से बनाएं दूरी : आचार्यश्री महाश्रमण

सुधर्मा सभा में एकादशमाधिशास्ता का बोध; आगम गाथाओं के जरिए समझाया—आहार संयम और ऊनोदरी ही आत्मा को पहुंचाती है समाधि

लाडनूं।
02 जून, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में 'विगय सेवन में हो विवेक' विषय पर उत्तराध्ययन सूत्र के माध्यम से पावन संबोध प्रदान किया। आचार्यश्री ने आहार संयम, रस परित्याग और ऊनोदरी को साधना व उत्तम स्वास्थ्य दोनों के लिए अनिवार्य बताते हुए विगय (दूध-दही) के अति-सेवन के प्रति सचेत किया।

तपस्या और निर्जरा का कार्य-कारण संबंध : आचार्य प्रवर ने जैन दर्शन के कर्म-सिद्धांत को स्पष्ट करते हुए मुख्य बिंदु रेखांकित किए।

१. तप से कर्म-निर्जरा : साधना के क्षेत्र में तपस्या का सर्वोच्च स्थान है, क्योंकि तप के द्वारा ही कर्मों की निर्जरा संभव है। दार्शनिक दृष्टि से तपस्या कारण है और निर्जरा उसका कार्य है। इस कार्य-कारण संबंध में अभेद की

> स्वाद लोलुपता व विगय का अधिक सेवन साधना में बड़ा अवरोध, तपस्या में अरत रहने वाला ही है 'पाप श्रमण'
> -आचार्यश्री महाश्रमण

स्थापना होने से तपस्या के बारह भेद ही निर्जरा के भी बारह भेद बन जाते हैं।

२. अनाहार से जुड़े चार आयाम : साधु जीवन में अनशन, ऊनोदरी, भिक्षाचरी और रस परित्याग (विगय वर्जन)—ये चारों आयाम अनाहार और आहार संयम से सीधे जुड़े हुए हैं, जिनका यथासंभव निरंतर प्रयोग होते रहना चाहिए।

भोजन का विवेक और विगय वर्जन का नियम : शांतिदूत ने खान-पान की आसक्ति पर कड़ा प्रहार करते हुए आचरण के व्यावहारिक सूत्र दिए:

१. असंयम की असली पहचान : भोजन करने के पश्चात यदि मनुष्य का ध्यान बार-बार अपने पेट या भारीपन की ओर जाता है, तो यह इस बात का सीधा प्रमाण है कि खाने में असंयम हो गया है। इसके विपरीत, यदि रात्रि में थोड़ी भूख महसूस हो और पेट हल्का रहे, तो यह उत्तम आहार संयम का द्योतक है।

२. दूध-दही का अति-सेवन दोष : शास्त्र के अनुसार दूध और दही 'विगय' हैं। जो साधु इनका बार-बार सेवन करता है और तपस्या में रुचि नहीं रखता, वह 'विगय लोलुप' होने के कारण पाप श्रमण कहलाता है। भले ही इनसे स्वास्थ्य न बिगड़े, पर ये साधना में अवरोध अवश्य पैदा करते हैं। तेरापंथ संघ में इनका पूर्ण निषेध नहीं है, पर इनके सेवन में कड़ा विवेक व मात्रा का नियंत्रण जरूरी है।

श्रावकों को कड़ा निर्देशःहोटल व विदेश यात्रा में सजगता : पूज्य प्रवर ने गृहस्थ समाज के लिए खान-पान की शुद्धता की तीन वैश्विक विचारधाराओं पर प्रकाश डाला।

१. मर्यादा का पालन : जैन श्रावकों को तामसी भोजन, नॉनवेज और मदिरा से पूरी तरह दूरी बनाए रखनी चाहिए। वर्तमान युग में यदि कभी व्यापार या यात्रा वश होटल अथवा विदेश जाना पड़े, तो अपने आहार की शुद्धता को लेकर आँखों में पूरी जागरूकता रखनी चाहिए।

२. पशु उत्पादों से संयम : संसार में शुद्ध शाकाहार के बाद दूसरी बड़ी विचारधारा पशु-आधारित उत्पादों (दूध-दही) के त्याग की भी है, जो और अधिक ऊंचे संयम की बात है। अंडा-मांस का त्याग तो बुनियादी नियम है। हर श्रावक को भोजन की मात्रा और उसकी शुद्धता का विवेक रखना ही चाहिए।

आचार्यश्री के कीर्तिमानों का ऐतिहासिक उल्लेख : मंगल प्रवचन के संपन्न होने पर सरदारशहर निवासी मुनि जम्बू कुमार जी ने वर्तमान आचार्य श्री महाश्रमण जी के पावन युग में संघ और समाज के धरातल पर स्थापित हुए अनेक ऐतिहासिक कीर्तिमानों, पदयात्राओं और रचनात्मक शासन-प्रभावना के स्वर्णिम प्रसंगों का विशेष रूप से उल्लेख करते हुए अपनी गौरवमयी भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की।

रात 12 बजे के बाद खाना-पीना छोड़ें गृहस्थ, रात्रि भोजन त्याग की ओर बढ़ाएं कदम : आचार्यश्री महाश्रमण

'रात्रि भोजन परिहार' विषय पर युगप्रधान की अमृत देशना;—सूर्यास्त से सूर्योदय तक पानी की एक बूंद भी न लेना साधुत्व की सर्वोच्च निवृत्ति

लाडनूं।
03 जून, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के उज्ज्वल नक्षत्र, अहिंसा के अग्रदूत, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में 'रात्रि भोजन परिहार' विषय पर आगम के आलोक में पावन प्रतिबोध प्रदान किया। आचार्यश्री ने साधु जीवन के छठे महाव्रत रूपी नियम की महत्ता बताते हुए जेठ मास की भीषण गर्मी व लू के बीच चारित्रात्माओं द्वारा की जाने वाली कठिन तितिक्षा (सहनशीलता) को रेखांकित किया।

सूर्यास्त से सूर्योदय–पानी की बूंद का भी त्याग : आचार्य प्रवर ने संयम और रात्रि निवृत्ति के कड़े नियमों को समझाते हुए मुख्य बिंदु रेखांकित किए।

१. साधुत्व का सुंदर आयाम : जैन आगम में पांच महाव्रतों के बाद छठे व्रत के रूप में सर्व रात्रि भोजन विरमण व्रत का विधान है। जहां गृहस्थ समाज में देर रात तक खाने-पीने का चलन है, वहीं चारित्रात्माएं सूर्यास्त से सूर्योदय तक अन्न तो दूर, भयंकर गर्मी में पानी की एक बूंद भी ग्रहण नहीं करतीं। दीक्षा के दिन से आजीवन चलने वाला यह नियम संयम का बहुत बड़ा उपक्रम है।

२. जेठ की दुपहरी में महान तपस्या : मई-जून की इस भीषण गर्मी में भी साधु खुले आसमान के नीचे नहीं, बल्कि आच्छादित स्थान में ही शयन करते हैं, जिससे कई बार अनिद्रा की स्थिति बनती है। चौविहार उपवास की स्थिति में दो रात और एक दिन बिना पानी के काटना और फिर व्याख्यान देना अत्यंत कठिन साधना है। जेठ के महीने में विहार करते समय संतों की पछेवड़ी (वस्त्र) पसीने से इतनी तर हो जाती है कि उसे निचोड़ना पड़ता है। यह पंचाग्नि तप से कम नहीं है।

दिन के भोजन में संयम और अध्यसन का निषेध : शांतिदूत ने चौबीस घंटे की चर्या में आहार के विवेक पर विशेष

> जेठ की भयंकर गर्मी और लू में भी मौन विहार, है बड़ी तपस्या
> -आचार्यश्री महाश्रमण

प्रकाश डाला।

१. बार-बार खाने का वर्जन : आगम के अनुसार साधु को दिन के समय भी भोजन में पूर्ण नियंत्रण रखना चाहिए। पूज्य आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने दिन में बार-बार भोजन करने को 'अध्यसन' (असंयम) कहा है। मध्याह्न के गोचरी-पानी के बाद और शाम के प्रतिक्रमण से पहले, पानी के अलावा कुछ भी ग्रहण नहीं करना चाहिए।

२. सूर्यास्त से पूर्व कार्य संपन्न : साधु को प्रयास करना चाहिए कि सूर्यास्त की कोर होने (सूरज डूबने) से पहले ही आहार-पानी का कार्य सुसंपन्न हो जाए। रात्रि का समय केवल ध्यान, स्वाध्याय, जप और आत्म-चिन्तन के लिए सुरक्षित है। रात में साधु के पास दवाइयाँ रखना भी वर्जित है।

गृहस्थों को पाथेयः धीरे-धीरे अपनाएं मर्यादा : पूज्य प्रवर ने श्रावक समाज को भी अपनी जीवन शैली में सुधार करने की व्यावहारिक प्रेरणा दी।

१. त्याग का क्रमिक संकल्प : गृहस्थों को भी अपने आत्म-कल्याण के लिए जितना संभव हो, रात्रि भोजन त्याग का प्रयास करना चाहिए। यदि पूर्ण त्याग संभव न हो, तो कम से कम रात १० बजे के बाद कुछ भी न खाने का नियम लें।

२. न्यूनतम मर्यादा : यदि यह भी मुमकिन न हो, तो कम से कम रात्रि १२ बजे के पश्चात दवाई और पानी के सिवाय अन्य सभी तामसी व गरिष्ठ चीजों का त्याग अवश्य कर देना चाहिए। आहार-पानी के प्रति यह जागरूकता गृहस्थों के स्वास्थ्य और आध्यात्मिक विकास दोनों के लिए हितकर है।

मंगल प्रवचन के संपन्न होने पर सरदारशहर निवासी मुनि जम्बू कुमार जी और मुनि कमल कुमार जी ने भी सुधर्मा सभा में उपस्थित चतुर्विध धर्मसंघ के सम्मुख अपनी ओजस्वी व सारगर्भित भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की।

कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग का दीक्षांत समारोह

राजाजीनगर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा आयोजित कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग सीनियर्स एवं जूनियर्स कार्यशाला का भव्य दीक्षांत समारोह तेरापंथ सभा भवन, राजाजीनगर में आभातेयुप राष्ट्रीय संगठन मंत्री रोहित कोठारी की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण से हुआ। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन राष्ट्रीय संगठन मंत्री रोहित कोठारी द्वारा किया गया तथा भिक्षु श्रद्धा स्वर टीम ने विजय गीत का संगान प्रस्तुत किया।

तेयुप अध्यक्ष जितेश दक ने सभी अतिथियों एवं उपस्थित जनों का स्वागत करते हुए मंगलकामनाएँ प्रेषित की। सप्त दिवसीय सीनियर्स एवं छह दिवसीय जूनियर्स कार्यशाला में प्रोविजनल राष्ट्रीय प्रशिक्षक आदित्य मांडोत, ज़ोनल ट्रेनर्स निहारिका सिंघी एवं आकाश शाह ने प्रतिभागियों को वक्तृत्व कला के विविध आयामों का प्रशिक्षण प्रदान किया। सभी प्रतिभागियों ने अपने-अपने विषयों पर प्रभावशाली वक्तव्य प्रस्तुत कर उपस्थित श्रोताओं को प्रभावित किया। विशेष प्रतिभागी के रूप में चयनित कर पुरस्कृत किया गया। साथ ही सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र एवं पदक प्रदान कर सम्मानित किया गया। तेयुप राजाजीनगर द्वारा राष्ट्रीय संगठन मंत्री, राष्ट्रीय प्रशिक्षक, राष्ट्रीय सीपीएस प्रभारी, तेरापंथ सभा राजाजीनगर अध्यक्ष, महिला मंडल अध्यक्षा एवं ज़ोनल ट्रेनर्स का भी सम्मान किया गया।

इस अवसर पर आभातेयुप राष्ट्रीय संगठन मंत्री रोहित कोठारी, मुख्य अतिथि एवं राजाजीनगर सभा अध्यक्ष अशोक चौधरी, मुख्य प्रशिक्षक एवं राष्ट्रीय प्रशिक्षक सीपीएस अकादमी अरविंद मांडोत, आभातेयुप राष्ट्रीय सीपीएस प्रभारी दिनेश मरोठी, तेयुप शाखा प्रभारी अमित दक एवं प्रोविजनल राष्ट्रीय प्रशिक्षक आदित्य मांडोत ने प्रेरणादायी विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर आभातेयुप प्रवृत्ति सलाहकार सतीश पोरवाड़, राजाजीनगर सभा मंत्री चन्द्रेश मांडोत, विशेष अतिथि संजीव गन्ना आदि की उपस्थिति रही आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री अनिमेष चौधरी ने व्यक्त किया।

'तेरापंथ टास्क फोर्स–शौर्य' का सफल एवं प्रेरणादायी आयोजन

लुधियाना।

परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी के मंगल आशीर्वाद एवं अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद (ABTYP) के मार्गदर्शन में तेरापंथ युवक परिषद, लुधियाना द्वारा डीएवी पब्लिक स्कूल, बीआरएस नगर, लुधियाना में 'तेरापंथ टास्क फोर्स – शौर्य' कार्यक्रम का सफल, प्रभावशाली एवं ऊर्जावान आयोजन किया गया। विद्यालय के ऑडिटोरियम में आयोजित इस विशेष कार्यक्रम में वरिष्ठ वर्ग के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाई। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को आपदा प्रबंधन, प्राथमिक उपचार एवं सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक करना रहा। विद्यालय की प्राचार्या जसविंदर कौर सिद्धू ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे जीवनोपयोगी एवं व्यवहारिक विषयों को विद्यालयी पाठ्यक्रम का नियमित हिस्सा बनाया जाना चाहिए। उन्होंने तेरापंथ युवक परिषद का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए इसे विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी एवं प्रेरणादायक पहल बताया। कार्यक्रम में ABTYP संयुक्त मंत्री-1 एवं विद्यालय के पूर्व छात्र पवन नौलखा ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए छात्र जीवन के कर्तव्यों, सामाजिक उत्तरदायित्वों तथा युवाओं की राष्ट्र एवं समाज निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रेरणादायी विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रहा TTF प्रशिक्षक नवीन भंडारी एवं प्रतीक पटवा द्वारा दिया गया व्यावहारिक प्रशिक्षण। उन्होंने विद्यार्थियों को Burns (जलना), Bleeding (रक्तस्राव), Fire Safety (अग्नि सुरक्षा), Fracture (फ्रैक्चर) एवं CPR जैसे पाँच महत्वपूर्ण विषयों की जानकारी लाइव डेमो एवं प्रैक्टिकल उदाहरणों के माध्यम से दी। विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह के साथ प्रशिक्षण में भाग लेकर आपातकालीन परिस्थितियों में कार्य करने की महत्वपूर्ण तकनीकों को सीखा। तेरापंथ युवक परिषद, लुधियाना के उपाध्यक्ष विनीत बैद ने विद्यालय प्रशासन, प्राचार्या एवं समस्त प्रबंधन का हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके सहयोग एवं सकारात्मक दृष्टिकोण से ही इस प्रकार के समाजोपयोगी कार्यक्रमों को सफलता मिलती है। कार्यक्रम के सफल संचालन एवं सुव्यवस्थित प्रबंधन में TYP सदस्य अंकित नाहटा एवं मुदित धारीवाल की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस अवसर पर तेरापंथ पंजाब सभा उपाध्यक्ष कमल नौलखा, तेरापंथ सभा अध्यक्ष धीरज सेठिया, केसरी सुराणा, महिला मंडल अध्यक्षा जया बुचा, प्रेम सेठिया, ममता नौलखा एवं पूजा पुगालिया की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई तथा सभी ने मिलकर कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण सहयोग दिया। तेरापंथ टास्क फोर्स – शौर्य' ने एक बार फिर यह सिद्ध कर दिया कि सही प्रशिक्षण, जागरूकता और सेवा भावना से युवाओं को न केवल सक्षम बल्कि जिम्मेदार एवं संवेदनशील नागरिक बनाया जा सकता है।

ईमानदारी और सदाचार ही जीवन की सर्वोच्च संपत्ति

जयपुर।

निर्माण नगर स्थित एक स्थानीय विद्यालय के नवनिर्मित संबोधि सभागार में शनिवार को आयोजित धर्मसभा में जैन संत मुनि श्री तत्व रुचि जी 'तरुण' ने 'ज्ञान का सार है - आचार' विषय पर प्रवचन देते हुए कहा कि सदाचार और सद्चरित्र जीवन की सर्वोच्च संपत्ति हैं।

उन्होंने कहा कि अपने व्यवसाय और कार्यक्षेत्र में ईमानदारी बनाए रखना प्रत्येक व्यक्ति की नैतिक जिम्मेदारी है। मुनि श्री जी ने कहा कि ईमानदारी से किया गया कार्य समाज में विश्वास का निर्माण करता है।

उन्होंने कहा कि संसार में ईमानदारी से श्रेष्ठ कोई नीति नहीं है और यह चरित्रवान व्यक्ति का सर्वोत्तम गुण है। इस अवसर पर मुनि संभव कुमार जी ने चरित्र की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जीवन में चरित्र का स्थान सर्वोपरि है। चरित्रवान व्यक्ति ही वास्तव में मूल्यवान और महान कहलाता है। मुनि श्री जी ने आचार की महत्ता का उल्लेख करते हुए कहा कि ज्ञान प्राप्ति का मूल उद्देश्य आचरण की पवित्रता है। ज्ञान तभी सार्थक है जब वह व्यक्ति को सदाचार की ओर अग्रसर करे। उन्होंने कहा कि आचार ही ज्ञान का वास्तविक सार है। कार्यक्रम का शुभारंभ तीर्थंकर मल्ली प्रभु की स्तुति के साथ हुआ। संतों ने श्रद्धालुओं को साधना की गहराई का अनुभव कराने के लिए ध्यान एवं योग के विशेष प्रयोग भी करवाए।

'अहिंसा परमो धर्म' कार्यशाला का हुआ सफल आयोजन

फारबिसगंज।

आचार्य श्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि प्रशांत कुमारजी मुनि कुमुद कुमारजी के सान्निध्य में आयोजित 'अहिंसा परमो धर्म' कार्यशाला में उपस्थित श्रद्धालु को संबोधित करते हुए मुनि प्रशांत कुमारजी ने कहा- आगम में अनेकों ऐसे सूत्र है जो मनुष्य को आत्म कल्याण की ओर आगे बढ़ाते है। हमें आगम के तीन सूत्रों को हमेशा अपने जीवन में अपनाना चाहिए। हमें वोसिरामि, मिच्छामि दुक्कड़म और हमेशा हल्के बनने के भाव को अपने जीवन में लाना चाहिए। हमें उन सभी वस्तु, विचारों का त्याग करें जिनका हमारे जीवन में कोई मूल्य न हो।यानि अनावश्यक बुरे विचार और भावों का त्याग करना चाहिए। वोसिरामि यानि किसी भाव या वस्तु को छोड़ना अथवा त्याग करना।

'वोसिरामि' हमें सतपथ का मार्ग दिखाता है। हर श्रावक श्राविका के लिए यह अनिवार्य है की रात्रि में सोने से पूर्व वह 84 लाख योनि से खमत खामणा करे और यह चिंतन अवश्य करें कि मेरे कारण किसी का भी दिल न दुखे। दिल दुखा हो या न ही बुरे भाव आए हो ।अगर ऐसा हुआ हो तो अपनी आत्मा की शुद्धि करते हुए उस जीव से मिच्छामी दुक्कड़म ले लेवे। अगर किसी ने कुछ कह दिया हो तो उन भावों को लेकर ना बैठे। उस विचार के साथ एक रात्रि बीतने पर सौ रात्रि खराब हो सकती है। हमेशा हमें विचारों से हल्का बनना चाहिए यही आनंदमय जीवन का सूत्र है। जिस प्रकार एक डॉक्टर सलाह देता है कि वजन से हल्के बनो ताकि आपका स्वास्थ्य स्वस्थ रहे इसी तरह मन से विचारों से हल्के बनने पर हमें मानसिक एवं शारीरिक सभी बीमारियों से निजात मिल सकती है।

जीवन में हमेशा अहंकार का त्याग करना चाहिए। अहंकार हमेशा ही हमें अवनति के मार्ग की ओर अग्रसर करता है। मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा - हमें हमेशा अहिंसा के मार्ग पर चलना चाहिए। हमेशा अनावश्यक हिंसा से बचने का प्रयास करना चाहिए। किसी भी कार्य को करते समय उसके प्रति मन के भावों को हमेशा ही सहज रखना चाहिए। मन के भावों की तीव्रता हमारी गति को बिगाड़ भी सकती है।

बकरीईद के अवसर पर हजारों मूक प्राणियों की हिंसा एवं उनकी आत्म शांति हेतु मुनि श्री ने सभी को सामूहिक रूप में सामायिक के साथ सांयकालीन सात से आठ, नमस्कार महामंत्र के जप की प्रेरणा भी दी।

मुकेश राखेचा ने बताया कि तेरापंथ युवक परिषद द्वारा बकरीईद पर होने वाले हजारों मूक प्राणियों के आत्म शांति के लिए रात्रिकालीन सामूहिक सामायिक एवं नवकार महामंत्र आराधना आयोजित हुई।

❖ आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए। — आचार्य श्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
08 जून - 14 जून 2026

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. **8905995002 पर व्हाट्सअप** अथवा **abtyptt@gmail.com** पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए
नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।
https://terapanthtimes.org/

:: निवेदक ::
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

युगधर्म के प्रेरणास्रोत : आचार्य श्री तुलसी

● मुनि मदन कुमार ●

अणुव्रत युगधर्म है, मानव मात्र को संयम की ओर आकृष्ट करने की इसमें शक्ति है। अणुव्रत का उद्घोष है - संयम ही जीवन है। इसमें जीवन का दर्शन समाहित है। संयम के बिना शान्ति और शान्ति के बिना सुख की कल्पना ही दुरूह है। अणुव्रत प्रवर्त्तक आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन के माध्यम से इस सच्चाई को उजागर करने का सार्थक श्रम किया। उन्होंने खूब देशाटन किया, खूब साहित्य लिखा, खूब जन संपर्क किया और खूब प्रवचन कर जनता जनार्दन को आलोकमय बनाया। वे इस धर्मपरायण देश के पहले धर्मगुरु थे जिन्होंने उपासना को गौण कर आचार-शुद्धि का बिगुल बजाया। अणुव्रत आन्दोलन के माध्यम से आचार्य श्री तुलसी मानव धर्म के महान व्याख्याकार बने। उन्होंने अपने परिचय में कहा - 'मैं सबसे पहले मानव हूँ, उसके बाद धार्मिक हूँ और तदनन्तर धर्माचार्य हूँ।' वे जनता के जीवन-परिष्कार के लिये कहते थे - 'मुझे वोट नहीं चाहिये, मुझे नोट नहीं चाहिये और मुझे प्लॉट भी नहीं चाहिये किन्तु मुझे तुम्हारे जीवन की खोट चाहिये।' जीवन की खोट मांगने वाले वे विलक्षण सन्त थे। अपने ओजस्वी विचारों से उन्होंने लाखों लोगों के हृदय पर शासन किया। उनकी वाणी और व्यक्तित्व में चमत्कार था राष्ट्रऋषि आचार्य श्री तुलसी 22 वर्ष की वय में तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य बन गये, यह एक आश्चर्य है किन्तु इससे भी बड़ा आश्चर्य यह है कि 58 वर्षों तक तेरापंथ पर शासन करने के पश्चात् आचार्य पद का विसर्जन कर दिया। विरोध को विनोद समझने वाले शलाकापुरुष थे। वे सत्य, शिव और सौन्दर्य के संगम पुरुष थे। युगद्रष्टा आचार्य श्री तुलसी विक्रम संवत् 2054 आषाढ़ कृष्णा तृतीया को इस संसार से अदृश्य हो गये, किंतु फिर भी वे लाखों लोगों के हृदय में बसे हुये हैं। शुचिता के वे संगम पुरुष थे। 'ज्यों की त्यों धर दीनी रे 'चदरिया' के वे सार्थक प्रतीक बने। उनका जीवन द्वितीया के चान्द की तरह सदा प्रवर्द्धमान रहा! उनके महाप्रयाण के पश्चात् दिल्ली में आयोजित स्मृति सभा में अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा था – 'आचार्य श्री तुलसी अग्रणी सन्त, चिन्तक और कर्मयोगी थे। उन्होंने आचार्य पद छोड़ दिया, मानो वे महाप्रस्थान की तैयारी कर रहे थे।' राष्ट्रीय समाचार पत्र दैनिक हिन्दुस्तान के मुख्य संवाददाता रमाकान्त गोस्वामी ने एक बार मुझसे 'मुनि मदन कुमार' मिलन-प्रसंग पर कहा था कि राष्ट्रऋषि आचार्य श्री तुलसी जैन धर्म के शंकराचार्य थे। वे 'भारत रत्न' के सच्चे अधिकारी हैं!

संक्षिप्त खबर

सीपीएस कार्यशाला का शुभारंभ

उदयपुर। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में सीपीएस एकैडमी फॉर लीडर एंड एक्सीलेंस के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद उदयपुर द्वारा सात दिवसीय कॉन्फ़िडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला की शुरुआत हुई। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुई। स्वागत उद्बोधन और प्रशिक्षक परिचय तेयुप अध्यक्ष अशोक चोरड़िया द्वारा दिया गया। अभातेयुप साथी अजीत छाजेड़ द्वारा सभी को इस कार्यशाला से सीखने के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित की गई। संचालन मंत्री विनीत फुलफगर द्वारा किया। सीपीएस ट्रेनर चेतना पोखरना द्वारा प्रथम दिन स्टेज पर कैसे अपनी प्रस्तुति देनी है और अपनी बात को प्रेजेंट करना है इसके बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर तेयुप पदाधिकारी संदीप कोठारी, आशीष बोहरा, विनोद भंडारी, संजय सिंघवी, संयोजक भाविन कच्छारा, वैभव चौधरी और कई प्रतिभागी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

सेवा कार्यक्रम

तिरुप्पुर। अनूठी एवं प्रशंसनीय पहल 'प्रीति पात्र' का चतुर्थ वितरण कार्यक्रम का शुभारंभ को तेरापंथ सभा भवन से किया गया। तेरापंथ समाज एवं अन्य जनों के सहयोग से इस बार कुल 36 प्रीति पात्र तैयार किए गए, जिनमें हाइजीन किट, मेडिकल किट, प्रीमियम फूड पैकेट, तौलिया एवं बेडशीट पैक किए गए थे। इस वितरण में प्रीति पात्र टीम से रोहित डागा, सौरव सुराना, मोहित बरडिया, हेमंत बरडिया तथा तेयुप उपाध्यक्ष क्षितिज बरडिया एवं सह मंत्री, मंजीत बरडिया ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। सभी के सहयोग से वितरण कार्य सफलतापूर्वक एवं आनंदपूर्वक सम्पन्न हुआ।

तेयुप की कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह

गंगाशहर।

तेरापंथ युवक परिषद् , गंगाशहर की नवगठित कार्यकारिणी का शपथग्रहण समारोह युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि अमृत कुमार जी के सान्निध्य में जैन संस्कार विधि द्वारा आयोजित हुआ। मुनि श्री के मुखारबिंद से नमस्कार महामंत्र, तेयुप साथियों द्वारा विजय गीत एवं तेरापंथी सभा गंगाशहर के उपाध्यक्ष पवन छाजेड़ के द्वारा श्रावक निष्ठा पत्र वाचन से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम में जैन संस्कारक पवन छाजेड़, पीयूष लूणिया, विपिन बोथरा,भरत गोलछा, रोहित बैद और अनिल बैद ने कार्यक्रम को सम्पादित करवाया। तेरापंथ युवक परिषद् के निवर्तमान अध्यक्ष ललित राखेचा ने नवगठित टीम को पद व संविधान की शपथ दिलवाई। देवेन्द्र डागा ने अध्यक्ष, मांगीलाल बोथरा व रोशन नाहटा ने उपाध्यक्ष, दिनेश कुमार सोनी ने मंत्री, रोहित बैद व धर्मेन्द्र सामसुखा ने सह-मंत्री, विपिन बोथरा ने कोषाध्यक्ष व मयंक सेठिया ने संगठन-मंत्री और मयंक सिंगी एवं हर्षित नाहटा ने क्रमश किशोर मंडल संयोजक सह-संयोजक के पद की शपथ ग्रहण की। अध्यक्ष देवेन्द्र डागा ने परामर्शक, कार्यकारिणी सदस्यों की घोषणा की। साथ ही इस अवसर पर किशोर मण्डल संयोजक मयंक सिंघी ने अपनी टीम के सदस्यों का नामोलेख किया। अध्यक्ष देवेन्द्र डागा ने अपना अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कहा कि सभी युवाओं और किशोरों को संगठन के साथ- साथ स्वयं का विकास करने की ओर कदम बढाऩा है। डागा ने अपनी कैबिनेट और कार्यकारिणी सदस्यों के साथ पांच सूत्रीय संकल्पों की घोषणा की। इस अवसर पर मुनि अमृत कुमार जी ने नवगठित कार्यकारिणी को शुभकामना देते हुए कहा कि तेरापंथ के सिद्धांतों को पढ़े और अपनी प्रस्तुति देना का प्रयास करें।

सभी अपने दायित्व का जागरुकता से पालन करें नियमित दर्शन सेवा के साथ प्रवचन के श्रवण का लक्ष्य रखें। उन्होंने विकास के गुर देते हुए गुरु दृष्टि की आराधना करने और संकल्पों को पूरा करने के लिए सार्थक कदम आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। मुनि उपशम कुमार जी ने अपने वक्तव्य से युवाओं को शनिवार की सामायिक करने के लिए प्रेरित किया। तेरापंथ न्यास ट्रस्टी जतन दुगड़, तेरापंथी सभा के उपाध्यक्ष पवन छाजेड़, तेरापंथ महिला मंडल मंत्री रेखा चोरड़िया ,अणुव्रत समिति के अध्यक्ष करणीदान रांका, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम मंत्री अजीत संचेती ने अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की। कार्यक्रम का कुशल संचालन युवा साथी कुलदीप छाजेड़ ने किया।

ज्ञानशाला कार्यक्रम का हुआ आयोजन

टॉलीगंज।

टॉलीगंज सभा के अध्यक्ष अशोक पारख ने सभी का स्वागत किया। मुनि जिनेश कुमार जी ने बच्चों को ज्ञानशाला से जुड़ने की प्रेरणा दी और कहा कि जैसे हम लोग बच्चों को अन्य क्लास भेजते है वैसे ही ज्ञानशाला भी भेजे क्योंकि यहां संस्कार पुष्ट होते हैं प्रशिक्षिकाए बहुत श्रम करती हैं।

ज्ञानशाला केंद्रीय कमेटी के प्रकाश दुगड, पूजा पारख और नीतू बैद उपस्थित थे। परीक्षा व्यवस्थापक अजय आनन्द पुगलिया और सभा अध्यक्ष अशोक जी पारख ने सभी उत्तीर्ण विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र और पुरस्कार से सम्मानित किया। सरोज पारख और पूनम चंद विजय राज नखत परिवार के सहयोग से बच्चों और प्रशिक्षिका को सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला संयोजक विनय सेठिया ने किया।

मुनि आत्मानन्द जी की स्मृति में भावांजलि

मुनिवर आत्मानन्द जी, मानव जीवन रो असली लियो आनन्द जी

● मुनि कमल कुमार ●

मुनिवर आत्मानन्द जी, मानव जीवन रो असली लियो आनन्द जी।

(1) लघुवय में ही पिता गुजरग्या, माता थाने पाल्या।
थे भी समझदार बणकर के सब ने खूब संभाल्या ॥ मुनिवर...

(2) संत सत्यां री सेवा करके, पाया शुभ संस्कार।
तुलसी गुरुवर दीक्षा खातर, प्रकट कर्या उद्गार ॥ मुनिवर...

(3) अमृत सर में धर्म ध्यान री, गंगा खूब बहाई।
समय-समय चौमासा देकर, गुरुवर महर कराई ॥ मुनिवर...

(4) श्रद्धानिष्ठ अलंकरण सुण, खुशियां अपरम्पार।
श्रम रो अंकन करके गुरुवर, करदी जय-जय कार ॥ मुनिवर...

(5) तुलसी महाप्रज्ञ री थां पर महर रही अनपार।
महाश्रमण दीक्षा देकर के कर्यो घणो उपकार ॥ मुनिवर...

(6) अस्सी-वय में दीक्षा लेकर खूब दिखायो जोश।
तन-मन स्यूं सेवा में लाग्या, सगला ने संतोष ॥ मुनिवर...

(7) योग-क्षेम वर्ष रो अवसर, किस्मत जागी म्हारी।
सेवा रो अवसर में पायो, गुरु अर्जी स्वीकारी ॥ मुनिवर...

(8) समाधिस्थ बणकर के रहिज्यो, आ म्हारी अरदास।
तप जप मौन साधना द्वारा पाओ परम प्रकाश ॥ मुनिवर...

(9) सदा स्वावलंबी रहणो रा, देख्यो जबरो कोल।
देख देख कर थारी वृत्यां, कियां करां म्हे मौल॥ मुनिवर...

(10) थोड़ी सी गड़बड़ होता ही, कर्यो शीघ्र संकेत।
म्हारो तो अब समय आग्यो हो थिया जबर सचेत॥ मुनिवर...

(11) महाश्रमण गुरु महर करा कर दर्श दिया तत्काल।
संथारे री अर्जी सुनकर चकित हुया गणपाल
सबस्यूं खमत खामना करके जीत्यो जग जंजाल।। मुनिवर..

(12) त्रय घंटा रा त्याग कराया, सरध्या बेकर जोड़ ।
चटके थे तो काम बणायो, मन इकतारी जोड़ ॥ मुनिवर..

(13) अंत समय में छोटा मोटा, संत होग्या भेला ।
पल भर में ही श्रावकां रा जबरा चाल्या रेला ॥ मुनिवर..

(14) भिक्षु शासन है जयवन्तो, जन-जन री आवाज ।
देख देख कर थारी दृढ़ता, चार तीर्थ ने नाज ॥ मुनिवर..

(15) विनय नम्रता सहन शीलता, देखी अपरम्पार ।
आगे स्यूं आगे थे बढ़ज्यो, प्राप्त करो शिव द्वार ॥ मुनिवर..

(16) महाश्रमण गुरुवर दीक्षा दे, थाने किया निहाल ।
म्हैं भी म्हारा कोड़ पुरावां, गाकर मुनिगण ढाल ॥ मुनिवर..

(17) योग क्षेम वर्ष रा अवसर, चार तीर्थ रा ठाठ ।
सब ने जबारो सीन दिखायो, कर के हृदय विराट ॥ मुनिवर..

(तर्ज : म्हारा बाबा भैरूनाथ)

नेत्रदान जागरूकता अभियान का आयोजन

चाड़वास। अखिल भारतीय तेरापथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद चाड़वास द्वारा शिविर का आयोजन परिषद के अध्यक्ष दीपक भटेरा की अध्यक्षता में हुआ जिसमें 7 नेत्रदान के पंजीयन हुए। अध्यक्ष ने बताया कि मरणोपरांत नेत्रदान करने से दूसरे को रोशनी मिलती हैं। नेत्रदान जागरूकता अभियान के साथ ही निशुल्क नेत्रजांच शिविर का भी आयोजन हुआ। जिसके गुरुकृपा आई केयर हॉस्पिटल बीदासर के अनुभवी चिकित्सकों के द्वारा सेवा प्रदान की गई । जिसमें कुल 295 रोगियों की नेत्रो जांच की गयी। 210 चश्मों का वितरण किया गया। शिविर के संयोजक प्रदीप बैद एवं राकेश बैद ने अपना पूरा श्रम नियोजन कर के शिविर को सफल बनाया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन

जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार विधि

नामकरण संस्कार

■ **सूरत।** गंगाशहर (बीकानेर) निवासी सूरत प्रवासी श्रीमान जितेंद्र बोथरा के पुत्र-पुत्रवधू लोकेश-उर्वशी बोथरा के प्रांगण में पुत्र रत्न का जन्म हुआ। जिसका नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक धर्मचंद सामसूखा, मनीष कुमार मालू ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

पाणिग्रहण संस्कार

■ **सूरत।** श्री डूंगरगढ़ निवासी सूरत प्रवासी विमल बोथरा के सुपुत्र यश बोथरा का शुभ पाणिग्रहण संस्कार वडोदरा निवासी व प्रवासी स्वः विराज वेलानि की सुपुत्री काव्या वेलानि के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड, विनीत श्यामसुख, अभय बोथरा ने सम्पूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

उद्घाटन एवम लोकार्पण

■ **बालोतरा।** जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा द्वारा तेरापंथ नगर कार्यालय उद्घाटन जैन संस्कार विधि एवं मंगलमय मंत्रोच्चार के साथ संपन्न हुआ। संस्कारक के रूप में पुष्पराज कोठारी, प्रकाश श्रीश्रीमाल, कमल कुहाड़, श्री पवन मंडोत एवं रोशन बागरेचा ने नवकारमहामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। परिषद की ओर से तेयुप उपाध्यक्ष नवीन सालेचा,सहमंत्री प्रकाश रांका, कमलेश जीरावला, कोषाध्यक्ष CA विजय वडेरा एवं संगठनमंत्री श्लोक चोपड़ा ने आध्यात्मिक मंगलकामनाएँ प्रेषित कीं। सभा अध्यक्ष महेन्द्र वैद एवं मंत्री प्रकाश वैद ने जैन संस्कार विधि से कार्यालय उद्घाटन होने पर हर्ष व्यक्त करते हुए इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस अवसर पर सिवांची मालाणी संस्थान के अध्यक्ष शांतिलाल डागा, महासभा सदस्य गौतम सालेचा एवं धनराज ओस्तवाल , तेरापंथ सभा की पूरी टीम, महिला मंडल अध्यक्ष चंचल जी भंडारी एवं उनकी पूरी टीम एवं तेरापंथ सभा कार्य समिति के सदस्य गण, तेरापंथ किशोर मंडल संयोजक , उपसंयोजक तथा प्लॉट धारक भी उपस्थित थे।

तत्त्वरसिक मुनि प्रसन्नकुमार जी के प्रति भावांजलि

मुनि प्रसन्नकुमार जी तत्त्वरसिक, तपस्वी और कष्ट सहिष्णु सन्त थे

● मुनि मदन कुमार ●

तेरापंथ धर्मसंघ बड़े भाग्य से मिलता है। इस धर्म शासन को नन्दन वन की उपमा दी गयी है। इसके आद्य प्रणेता परमपूज्य आचार्य श्री भिक्षु स्वामी महायशस्वी महापुरुष थे। उनमें साधना, तितिक्षा और वैराग्य की पराकाष्ठा थी। उनकी उत्तरवर्ती आचार्य-परंपरा बहुत गौरवशाली और प्राणवान है। इस धर्मसंघ में दीक्षित होना सौभाग्य है और समाधि मरण करना महासौभाग्य है। इसलिये ही शायद कहा जाता होगा कि साधु जीये तो लाख का और मरे तो सवा लाख का। यद्यपि साधु को मरण की कामना नहीं करना है, पण्डित मरण (सकाम मरण) की कामना की जा सकती है।

मुनि प्रसन्न कुमारजी तत्त्वरसिक, तपस्वी और कष्ट सहिष्णु सन्त थे। उनकी दीक्षा तेरापंथ की राजधानी लाडनूं में परमपूज्य युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी के कर-कमलों से विक्रम संवत् २०३४ आषाढ़ शुक्ला तृतीया को हुई थी। उन्हें पहला चतुर्मास गुरुकुलवास में करने का सौभाग्य मिला और फिर वे बहिर्विहारी बन गये। उनकी दीक्षा से एक लाभ यह हुआ कि वे बंधु-त्रिपुटी बन गये, क्योंकि उनकी दीक्षा से पूर्व उनके बंधुवर मुनि संजय कुमारजी और मुनि प्रकाश कुमारजी धर्मसंघ में दीक्षित हो गये थे। मुनि प्रसन्न कुमारजी का यह सौभाग्य था कि उन्हें श्रद्धेय मंत्री मुनि सुमेरमलजी 'लाडनूं' के सान्निध्य में विकास करने का सुअवसर मिला और सुदूर प्रदेशों में विकास करने की यात्रा करने का सुनहरा अवसर मिला। यात्रा से उपकार होता है और अनुभव की वृद्धि होती है। देशाटन का साधु जीवन में बहुत मूल्य है। सन् 1985 में श्रद्धेय मुनि महेन्द्र कुमारजी स्वामी का चतुर्मास दिल्ली में था। मैं (मुनि मदन कुमार) और मुनि अजित कुमारजी स्वामी साथ में थे। सन् 1986 में दिल्ली में हमारा पुनः चतुर्मास होने से परमाराध्य गुरुदेव श्री तुलसी ने कल्प की दृष्टि से श्रद्धेय मुनि संगीत कुमारजी स्वामी को दिल्ली भिजवाया। मुनि प्रसन्न कुमारजी उनके साथ में थे। इस तरह पांच सन्तों का चतुर्मास सदर बाजार में हुआ। साथ में रहने का अच्छा मौका मिला। शान्त सहवास और सामुदायिक जीवन बहुत मूल्यवान होता है। सन् 1989 के योगक्षेम वर्ष लाडनूं में श्रद्धेय मुनि सोहनलालजी (श्रीडूंगरगढ़), मुनि महेन्द्र कुमारजी स्वामी, मुनि मुदित कुमारजी (परम पूज्य युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी) आदि दस सन्तगण एक वर्ग में रहे। बड़ा आनन्द मंगल रहा। सहवास का आनन्द आया। मुनि प्रसन्न कुमारजी भी इस वर्ग में थे। महामना आचार्य श्री तुलसी ने सन् 1994 के मर्यादा महोत्सव के अवसर पर मुनि प्रसन्न कुमारजी को अग्रगण्य बनाया और उनका पहला चतुर्मास दौलतगढ़ में हुआ। उन्हें मुनि हनुमानमलजी स्वामी के साथ में सेवा देने का लगभग 31 वर्ष तक अग्रगण्य के रूप में सौभाग्य मिला। इस वर्ष वे भीलवाड़ा में चतुर्मास करने के लिये पधारे पर अचानक काल-धर्म को प्राप्त हो गये। नवदीक्षित मुनिश्री प्रीत कुमारजी को उनकी सेवा करने का अच्छा मौका मिला। लाडनूं में दीक्षित मुनि प्रसन्न कुमारजी की लाडनूं में ही परमपावन आचार्य श्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में स्मृति-सभा हुई।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
08 जून - 14 जून 2026

संबोधि

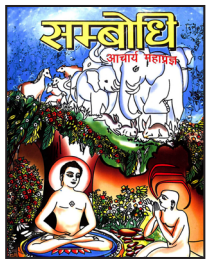

परिशिष्ट

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

मंत्र-ग्रहण के लिए यह भी आवश्यक है कि वह किसी मंत्र विशेषज्ञ गुरु के द्वारा प्रदत्त होना चाहिए। मंत्र के चुनाव में अनेक शत्रु, मित्र आदि तथ्यों का दर्शन किया जाता है, अन्यथा वह सफल नहीं होता। कुछ मंत्र जैसे-'सोहं, ॐ,' नमस्कार मंत्र आदि अपवाद होते हैं। वे सभी के लिए ग्राह्य हैं। किन्तु उनकी सम्यक् विधि और प्रयोग का प्रशिक्षण अपेक्षित है। सम्यक् प्रशिक्षण के अभाव में भी मंत्र का कार्य असफल देखा जाता है।

मंत्र और योग–

मंत्र और योग परस्पर संबंधित है। योग चित्तवृत्ति का निरोध तथा एकाग्रता है। एकाग्रता के बिना मंत्र का उच्चारण व्यर्थ चला जाता है। कबीर ने कहा है–

माला तो कर में फिरे, जीभ फिरे मुख मांय।
मनुवा तो दस दिशि फिरे, यह तो सुमिरण नांय॥

मंत्र जप के साथ मानसिक एकाग्रता, श्रद्धा, दृढनिष्ठा, पवित्रता, शुभ-भावना, उच्चारण का सम्यक् ज्ञान आदि तथ्य नितांत विशेय है।

फ्रांस की महिला वैज्ञानिक 'फिनलांग' ने शब्द-विज्ञान पर अद्भुत परीक्षण किया और वह इस परिणाम पर पहुंची कि शब्दों के साथ भावों का गहन संबंध है। हृदय शब्द का प्रतिबिंब है। 'फिनलांग' ने अपने लिए एक वीणा स्वयं तैयार की और नीचे की ओर तारों के साथ एक चाक का टुकड़ा बांध दिया। चाक को एक बोर्ड पर लगा दिया गया। वीणा को बजाने से चाक हिलने लगा और बोर्ड पर कुछ अस्पष्ट रेखाएं खिंच गई। उसने अनुभव किया कि जिस तरह गाना गाया जाता है और साज बजता है, उसी तरह की आकृतियां बोर्ड पर बन जाती हैं। एक बार उसने रोमन कैथोलिक मत के अनुयायी को अपना धार्मिक गीत गाने का निमंत्रण दिया। उसके गाने से बोर्ड पर एक स्त्री की गोद में बालक का चित्र खिंच गया। स्त्री मरियम और बालक ईसा था। गीत में प्रभु ईसा की स्तुति की गई थी। उसे इस पर भी संतोष नहीं हुआ। उसने वहां पढ़ रहे एक भारतीय विद्यार्थी को बुलाया और संस्कृत मंत्रों के उच्चारण की प्रार्थना की। विद्यार्थी ने कालभैरवाष्टक के स्तोत्र का गान किया। इससे एक भयंकर मूर्ति और कुत्ते की रेखाएं अंकित हो गई। स्तोत्र में व्यक्त भावना के अनुरूप ही आकृति बन गई। इससे वह इस निर्णय पर पहुंची कि शब्दों का भावों से गहन संबंध होता है और उन पर शब्दों का विशेष प्रभाव पड़ता है। यही कारण है कि मंत्रों द्वारा हृदय और मस्तिष्क विशेष रूप से प्रभावित होते हैं और उनके जप और पाठ से मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियों का उद्भव होता है।

ध्वनि-विज्ञान के विशारद वैज्ञानिकों ने ध्वनि के आधार पर अनेक आश्चर्यजनक प्रयोग किए हैं। ध्वनि के माध्यम से अनेक व्यक्तियों को असाध्य रोग से मुक्त किया है, सफल ऑपरेशन किया है, हीरे को काटा है। यौगिक ग्रंथियों का जागरण और प्राणों का जागरण भी मंत्र द्वारा किया जा सकता है। इस ध्वनि का मूल स्रोत है अनाहत, जहां से शब्द का जन्म होता है। अजपाजप, अनाहत की बात योग के विद्यार्थियों से अपरिचित नहीं है। आहत शब्द-मंत्र के द्वारा अनाहत को पकड़ना लक्ष्य है। ध्वनि से यह जो कुछ वैशिष्ट्य सम्पादित होता है, अगर अनाहत पकड़ में आ जाये तो उसकी कल्पना क्या की जाए? प्राणाचार्य पुस्तक में लिखा है- 'सारे शब्द और अक्षर जो ध्वनिमात्र प्रतीत होते हैं, वे एकनाद के मूर्त रूप है। वह नाद जिसे वक्ता के अतिरिक्त कोई नहीं सुन सकता। स्थान और प्रयत्न के बिना भी वह प्रत्यक्ष है। स्थान और प्रयत्न से उच्चारित ध्वनि आहत नाद है। आहत नाद का स्रोत तो अनाहत नाद ही है, जिसे मूल ध्वनि (Voice of the Silence) या आत्मनाद (Spiritual Sound) कह सकते हैं। धारणा, ध्यान, समाधि का साधन अनाहत नाद है, जिससे सारे रोग दूर हो जाते हैं।

जप और मंत्र– जप और मंत्र शब्दावलंबी होने से दोनों में भिन्नता नहीं है। एक के साथ दूसरे का योग सहजतया जुड़ जाता है। जप के अनेक प्रकार हैं-

वाचिक– जो दूसरों को सुनाई दे।

उपांशु– दूसरों को सुनाई न दे।

मानसिक– जिसमें होठ और जीभ का प्रयोग न कर जो केवल मन से किया जाए। **(क्रमशः)**

श्रमण महावीर

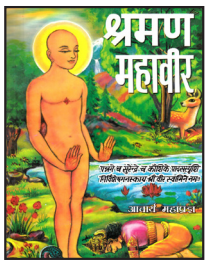

समता के तीन आयाम

स्वर्णकार मुनि से उत्तर चाहता था। मुनि उत्तर दे नहीं रहे थे। उनका मौन स्वर्णकार की आकांक्षा पर चोट करने लगा। उसने आहत स्वर में कहा- 'श्रमण ! वे स्वर्णयव मेरे नहीं हैं। वे सम्राट् श्रेणिक के हैं। मैं उनके अन्तःपुर के आभूषण तैयार कर रहा हूं। यदि वे स्वर्णयव नहीं मिलेंगे तो मेरी क्या दशा होगी, क्या आप नहीं जानते ?' आप श्रमण हैं। आपने कितना वैभव छोड़ा है! आप मेरे सम्राट् के दामाद रहे हैं। अब आप मेरे आराध्य भगवान महावीर के संघ में दीक्षित हैं। आप अपने त्याग को देखें, सम्राट् की ओर देखें, भगवान की ओर देखें और मेरी ओर देखें। मन से लोभ को निवारें, मेरी वस्तु मुझे लौटा दें। मनुष्य से भूल हो सकती है। आप साधक हैं। अभी सिद्ध नहीं हो। आप से भी भूल हो सकती है। अभी और कोई नहीं जानता। आप जानते हैं या मैं जानता हूं। तीसरा कोई नहीं जानता। आप मेरी बात पर ध्यान दें। मेरी वस्तु मुझे लौटा दें। भूल के लिए प्रायश्चित्त करें।'

स्वर्णकार द्वारा इतना कहने पर भी मुनि का मौन भंग नहीं हुआ। स्वर्णकार ने सोचा, श्रमण का मन ललचा गया है। ये दण्ड के बिना नहीं मानेंगे। उसने रास्ता बन्द कर दिया। वह तत्काल गीला चर्मपट्ट लाया। मुनि का सिर उससे कसकर बांध दिया। वे भूमि पर लुढ़क गए। सूर्य के ताप से चर्मपट्ट और साथ-साथ मुनि का सिर सूखने लगा।

मुनि ने सोचा– इसमें स्वर्णकार का क्या दोष है? वह बेचारा भय से आतंकित है। मैं भी मौन-भंग कर क्या करता? मेरे मौन-भंग का अर्थ होता-क्रौंच-युगल की हत्या। यह चक्रव्यूह किसी की बलि लिए बिना भग्न होने वाला नहीं है। दूसरों के प्राणों की बलि देने का मुझे क्या अधिकार है? मैं अपने प्राणों की बलि दे सकता हूं।

वे अपने प्राणों की बलि देने को प्रस्तुत हो गए। उनका चित्त ध्यान के प्रकोष्ठ में पहुंच गया। उनका मन सरिता में नौका की भांति तैरने लगा। कष्ट शरीर को होता है। उसकी अनुभूति मन को होती है। दोनों घुले-मिले रहते हैं, तब कष्ट का संवेदन क्षीण हो जाता है। यह है सहिष्णुता - समता के विवेक से पल्लवित, पुष्पित और फलित।

द्वन्द्व का होना जागतिक नियम है। इसे कोई बदल नहीं सकता। द्वन्द्व की अनुभूति को बदला जा सकता है। यह परिवर्तन द्वन्द्वातीत चेतना की अनुभूति होने पर ही होता है। द्वन्द्व की अनुभूति का मूल राग और द्वेष का द्वन्द्व है। इस द्वन्द्व का अन्त होने पर द्वन्द्वातीत चेतना जागृत होती है। समता आदि-बिन्दु द्वन्द्वातीत चेतना की जागृति का आदि-बिन्दु है। समता का चरम-बिन्दु द्वन्द्वातीत चेतना की पूर्ण जागृति है। इस अवस्था में समता और वीतरागता एक हो जाती है। साधन साध्य में विलीन हो जाता है। वस्तु-जगत् में द्वैत रहता है। किन्तु चेतना के तल पर द्वन्द्व के प्रतिबिम्ब समाप्त हो जाते हैं। विषमता-विहीन समता अपने स्वरूप को खो देता है। न विषमता रहती है और न समता, कोरी चेतना शेष रह जाती है।

मुक्त मानस : मुक्तद्वार

सामने की दीवार पर घड़ी है। उसमें नौ बजे हैं। क्या सब घड़ियों में नौ ही बजे हैं? यह सम्भव नहीं है। कोई दो मिनट आगे है तो कोई दो मिनट पीछे है। काल एक गति से चलता है। उसका प्रवाह न रुकता है और न त्वरित होता है। वह सदा और सर्वत्र अपनी गति से चलता है।

घड़ी काल नहीं है। वह काल की गति का सूचक-यंत्र है। यंत्र कभी शीघ्र चलने लगता है और कभी मंद। यह गति-भेद इस सत्य की सूचना देता है कि काल और घड़ी एक नहीं हैं।

धर्म और धर्म-संस्थान भी एक नहीं हैं। धर्म सत्य है। सत्य देश और काल से अबाधित होता है। देश बदल जाने पर धर्म नहीं बदलता। जो धर्म भारत के लिए है, वही जापान के लिए और जो जापान के लिए है, वही भारत के लिए है। भारत और जापान के धर्म दो नहीं हो सकते। जो धर्म अतीत में था, वही आज है और आने वाले कल में भी वही होगा। काल बदल जाने पर धर्म नहीं बदलता।

प्यास लगती है और हम पानी पीते हैं। प्यास लगने पर हम पानी ही पीते हैं, रोटी नहीं खाते। यह क्यों? इसका हेतु निश्चित नियम है। पानी पीने से प्यास बुझ जाती है, हर देश में और हर काल में। यह नियम देश और काल से बाधित नहीं है इसलिए यह सत्य है। **(क्रमशः)**

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

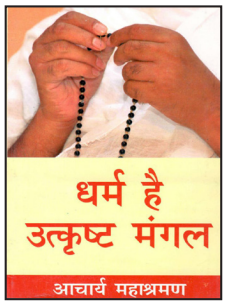

-आचार्यश्री महाश्रमण

संगठन के सूत्र

ऐन्टागोनिज्म (विरोध या प्रतिरोध)–

एक वनस्पति अपने आसपास दूसरी वनस्पतियों को पनपने नहीं देती। जैसे जहां अंग्रेजी बबूल होता है वहां दूसरे पौधे विकसित नहीं हो सकते। जिस समाज में यह वृत्ति होती है कि एक व्यक्ति समाज पर छाना चाहता है और दूसरे के विकास में विरोध-अवरोध पैदा करता है, वह समाज विकास की उच्च मंजिल तय नहीं कर सकता। संगठन को स्वस्थ बनाए रखने के लिए इस अन्योन्य क्रिया का परिहार अपेक्षित है।

पेरासाइट (परजीवी)–

पेरासाइट (परजीवी) की अन्योन्य क्रिया-एक वनस्पति दूसरी वनस्पति का शोषण करती है। जैसे अमर बेल। जिस वनस्पति को अमर बेल छूती है तो पहले उसके विकास को रोकती है, फिर उसे निर्बल बनाकर नष्ट भी कर सकती है। जिस समाज में अमर बेल पेदा हो जाती है वह समाज विकास के स्थान पर हास को प्राप्त होता है।

कम्पीटीशन (प्रतिस्पर्धा)–

एक वनस्पति दूसरी वनस्पति के साथ कम्पीटीशन करती है। शक्तिशाली विकसित हो जाती है, कमजोर को विकास का अवसर नहीं मिलता। संगठन के विकास के लिए यह अपेक्षित है कि समर्थ सदस्य अपने कमजोर सदस्यों को भी विकास के अवसर दें।

जैन आगमों में निगोद (वनस्पति काय के अत्यन्त सूक्ष्म जीव) का वर्णन मिलता है। निगोद के जीव उत्कृष्टतम साहचर्य का जीवन जीते हैं। अनन्त जीव एक साथ आहार लेते हैं, एक साथ श्वसन-क्रिया करते हैं और एक साथ मर जाते हैं।

वह संगठन दीर्घजीवी बन सकता है जिसके सदस्य साहचर्य का जीवन जीते हैं। एक के लिए अनेक तैयार रहते हैं। एक का सुख सबका सुख और एक का दुःख सबका दुःख होता है। पारस्परिक संवेदनशीलता सबको आश्वासन देती है। जहां हर सदस्य को सेवा और सहयोग का आश्वासन प्राप्त होता है वह समाज सुखी और विकासशील होता है।

इस प्रकार वनस्पति की अन्योन्य क्रिया का यथायोग्य स्वीकरण और परिहरण संगठन को गुणवत्ता प्रदान कर सकता है।

❖ आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए।

– आचार्य श्री महाश्रमण

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर
कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com
पर ई-मेल अथवा 8905995002
पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
08 जून - 14 जून 2026

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभाओं के समाचार

रोहिणी, दिल्ली

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा रोहिणी का शपथ ग्रहण समारोह कार्यक्रम युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण की विदुषी सुशिष्या शासनश्री साध्वी सुमन श्री जी के सान्निध्य में नव मनोनीत अध्यक्ष संजीव जैन व महामंत्री पराग जैन एवं उनकी सम्पूर्ण टीम का शपथ समारोह का कार्यक्रम संघीय गरिमा के साथ तेरापंथ भवन सेक्टर-5, रोहिणी, दिल्ली में सम्पन्न हुआ। महामन्त्र के मंगल उच्चारण व श्रावक निष्ठापत्र वाचन के साथ कार्यक्रम का प्रारम्भ हुआ। निवर्तमान अध्यक्ष विजय जैन ने संस्था शिरोमणि जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के नियमानुसार संघीय गरिमा में नव मनोनीत अध्यक्ष संजीव जैन को शपथ दिलवाई।दिल्ली सभा के पूर्व अध्यक्ष व आचार्य महाश्रमण चतुर्मास व्यवस्था समिति दिल्ली के महामंत्री युवक रत्न सुखराज सेठिया ने पदाधिकारियों व कार्यकारिणी सदस्यों को शपथ दिलवाई। ओम अर्हम की ध्वनि से महाश्रमण सभागार गूंज उठा। शासन श्री साध्वी सुमनश्रीजी ने अपने ओजस्वी वक्तव्य के दौरान युवक समाज को पाथेय प्रदान करते हुए कहा हमारा धर्म संघ तेजस्वी और प्राणवान धर्मसंघ है। इसकी विलक्षणता का एक बड़ा हेतु है- चार तीर्थ की देव गुरु धर्म पर अपूर्व श्रद्धा, श्रद्धा एक अमृत रसायन है। जिसमें कोई मिलावट नहीं, स्वार्थ नहीं और मांग नहीं असली सिक्के का मूल्य है लोग आदर से उस सिक्के की सुरक्षा करते हैं। जैसे रामभक्त हनुमान के हृदय में राम विराजमान थे वैसे ही हमारे रोम-रोम में भिक्षु और गुरु का नाम सदा अकित रहे। इसके साथ उन्नत आचार सुन्दर व्यवस्था अनुशासन मर्यादा और एक नेतृत्व एक गुरु के हाथ में डोर इन सूत्रों से संघ आज अध्यात्म की उँचाइयों को छू रहा है। सहआसान सहचिन्तान सह निर्णय और उनकी क्रियान्वित से धर्मसंघ की सभी सभा संस्थाएँ विकास के क्षेत्र में आगे बढ़ रही है। दिल्ली सभा के नवमनोनित अध्यक्ष बिमल बैंगाणी दिल्ली सभा के नव मनोनीत महामंत्री प्रदीप संचेति, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष पवन श्यामसुखा, महिला मंडल अध्यक्षा इंद्रा सुराणा, रोहिणी सभा के परामर्शक व रोहिणी जॉन के चैयरमेन अमृत लाल जैन, पूर्व निगम पार्षद कनिका जैन आदि ने अपनी मंगल कामना के साथ अपने विचार रखे। मंच का कुशल संचालन नव मनोनीत महामंत्री पराग जैन ने किया।

पलासिया, इंदौर

तेरापंथ समाज की साधारण सभा तेरापंथ भवन न्यू पलासिया मे आयोजित की गई। सर्व प्रथम सदन के सामुहिक नवकार मंत्र संगान के साथ साधारण सभा प्रारंभ हुई। तत्पश्चात तेरापंथ सभा मंत्री राकेश भंडारी द्वारा श्रावक निष्ठा पत्र का वांचन किया गया। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा इंदौर के अध्यक्ष निर्मल नाहटा ने विगत दो वर्षों के कार्यकाल की उपलब्धियों को सदन के सामने प्रस्तुत करते हुए सम्पूर्ण समाज के सहयोग हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया। सभा के इसी क्रम मे तेरापंथ सभा के मंत्री राकेश भंडारी ने तेरापंथ सभा के विगत दो वर्षों के कार्यकाल मे सभा की समस्त गतिविधियों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के इसी क्रम मे तेरापंथ सभा द्वारा मनोनीत चुनाव अधिकारी सुरेंद्र डाकालिया ने अध्यक्ष हेतु आए हुए प्रस्ताव फोर्म की धोषणा करते हुए प्रेमरतन बैद को सदन की सर्वसहमति से अध्यक्ष की धोषणा की गई। कार्यक्रम के अंत मे तेरापंथ सभा के सहमंत्री मनीष दुग्गड ने सदन का आभार व्यक्त किया।

कांचीपुरम/ चेन्नई

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कांचीपुरम का वार्षिक अधिवेशन अध्यक्ष इन्दरचन्द धोका की अध्यक्षता में एल एन के महल में आयोजित हुआ। नमस्कार महामंत्र सामुहिक समुच्चारण के पश्चात श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन हुआ। अध्यक्ष इन्दरचन्द धोका ने स्वागत स्वर प्रस्तुत करते हुए दो वर्षीय कार्यकाल में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सभी से मिले अतुलनीय सहकार, सहयोग, अनुदान के लिए आभार व्यक्त किया। मंत्री किशोर खाटेड़ ने सम्पादित गतिविधियों की रिपोर्ट पेश की। कोषाध्यक्ष ने आय-व्यय ब्यौरा प्रस्तुत किया। आगामी 2026-2028 कार्यकाल के लिए सर्वसम्मति से किशोर बाफणा को अध्यक्ष मनोनीत किया। सभी सदस्यों ने मुनि पुलकित कुमारजी के दर्शन किए। अध्यक्ष ने अपनी टीम की घोषणा की। अध्यक्ष : किशोर बाफना, उपाध्यक्ष : ज्ञानचंद धोका, मंत्री : ललित पिपाडा, सहमंत्री : पदम पिपाडा, सहमंत्री : दिलीप सिसोदिया, कोषाध्यक्ष : अशोक गादिया, चेन्नई से समागत रमेश भंसाली ने नवमनोनित टीम को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। मुनिश्री ने कहा कि तेरापंथ एक मर्यादित धर्मसंघ है। सभा सर्वोच्च संस्था हैं। आज नवमनोनित टीम का गठन और शपथग्रहण हुआ। आप सभी संघ और संघपति की सेवा करते हुए समाज उत्थान के साथ भावी पीढ़ी में सत् संस्कारों का जागरण हो, ऐसे कार्य निरंतर गतिमान रखे। बच्चों के लिए ज्ञानशाला का संचालन एवं महिला मंडल को सामुहिक सामायिक के लिए प्रेरणा दी। मुनि आदित्य कुमार ने गीत प्रस्तुत किया। रेखा खांटेड ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए महिला मंडल की तरफ से स्वागत गीत प्रस्तुत किया। अर्हत् वंदना के साथ शपथ ग्रहण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

समाज की तरफ से नवगठित टीम का शॉल से सम्मान किया गया। समण संस्कृति संकाय लाडनूं द्वारा आयोजित जैन विद्या परीक्षा प्रमाण पत्र वितरण भी किया गया। इस अवसर पर चेन्नई तेरापंथ श्रावक समाज के ताराचंद आंचलिया इत्यादि गणमान्य व्यक्तित्व उपस्थित थे।

बालोतरा

तेरापंथ भवन अमृत सभागार में साधारण सभा बैठक में चुनाव अधिकारी मोहन बाफना व पवन मंडोत के नेतृत्व में कार्यवाही हुई। राजेश बाफना ने बताया साधारण सभा में 2026 - 28 के लिए श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा बालोतरा के निर्विरोध नवनिर्वाचित अध्यक्ष राणमल फोलामेहता (विमल ग्रुप) चुने गए।निवर्तमान अध्यक्ष महेंद्र वैद ने तिलक कर साफा पहनाया और अग्रणीय व्यक्ति एवं पदाधिकारी सदस्यों ने माला पहनाकर हार्दिक बधाई शुभकामना मंगलकामना प्रेषित की।

हुबली

हुबली सभा का 2026-28 का चुनाव मनाव गदग में रखा गया। कमलेश भंसाली और रमेश पालगोता ने मंगला चरण में नवकार मंत्रा और विजय गीत से मिटिंग की शुरुआत की। पूर्व अध्यक्ष हेमल चोपड़ा ने अपना गत वर्ष 2025-26 की पूरा रिपोर्ट पेश की। उपस्थित 40 सदस्यों में से धर्मेंद्र भाई बागरेचा को सर्व सम्मति से मनाव द्वारा नए अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया । युग प्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के आशीष से कार्यक्रम संपन्न हुआ। अंत में संकेत वडेरा ने सबका आभार व्यक्त किया।मंच का कुशल संचालन प्रदीप बागरेचा ने किया।

हासन

हासन तेरापंथ सभा की साधारण कार्यकारिणी सभा का आयोजन हुआ, कार्यक्रम की शुरुवात नवकार महामंत्र एवं चुनाव अधिकारी डॉ जयन्तिलाल कोठारी के श्रावक निष्ठा पत्र वाचन से हुई, कार्यक्रम प्रारंभ मैं अध्यक्ष शोएन लाल तातेड ने सभी का स्वागत किया एवं सभी के साथ के लिए आभार व्यक्त किया, मंत्री विमल कोठारी ने साल हुवे सभी कार्यक्रम को विस्तार पूर्वक बताया एवं सभी का आभार व्यक्त किया,कोषाध्यक्ष किरण तातेड ने आय वय का लेखा जोख प्रस्तुत किया, तत्पश्चात 2026 - 2028 तेरापंथ सभा हासन का चुनाव हुआ. चुनाव अधिकारी डॉक्टर जयंतीलाल कोठारी ने सभा के सभी सदस्यों ने सर्व समति से एक बार और सोहन लाल तातेड को अगले हासन तेरापंथ सभा अध्यक्ष के रूप मैं चयन किया। सभी ने ॐ अर्हम की ध्वनि से समर्थन किया,

गंगाशहर

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा गंगाशहर का शपथ ग्रहण समारोह मुनि अमृत कुमार जी के सान्निध्य में बोथरा भवन गंगाशहर में आयोजित किया गया। शपथ ग्रहण समारोह में तेरापंथी सभा गंगाशहर के मंत्री जतन लाल संचेती ने पिछले कार्यकाल में सभा द्वारा किए गए कार्यों का संक्षिप्त प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। सत्र 2026-28 के लिए नव मनोनीत अध्यक्ष नवरतन बोथरा ने बोथरा भवन में मुनि अमृत कुमार जी के सान्निध्य में अपनी टीम के साथ शपथ ली। शपथ से पूर्व अपने उद्बोधन में नवरतन बोथरा ने कहा कि मैं और मेरी पूरी टीम संघ के द्वारा निर्धारित सभी कार्यक्रम पूरी निष्ठा से करेंगे। दायित्व ग्रहण करने के बाद सबसे महत्वपूर्ण कार्य है शान्तिनिकेतन का नव निर्माण करवाना इसके लिए पूरे समाज से यही आग्रह है कि जो भी इस कार्य में जुड़ना चाहे और सहयोग देना चाहे वह जुड़ सकता है चाहे तन से, चाहे मन से, चाहे धन से सभी तरह से जुड़ सकता है। सभी से यही आग्रह है कि सभा के सभी कार्यक्रमो में उत्साहपूर्वक भाग लेवें। नवरतन बोथरा ने नई टीम की घोषणा की पूर्व अध्यक्ष अमरचन्द सोनी ने पूरी टीम को शपथ दिलाई। तेरापंथ महासभा के संरक्षक जैन लूणकरण छाजेड़ ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया जिसका उच्चारण सभी श्रावक समाज ने किया । भिक्षु भजन मण्डली के सदस्यों ने सभा गीत का संगान किया। मुनिश्री अमृत कुमार जी ने नई टीम को बधाई देते हुए कहा कि आज नई जोड़ी है नवरतन व जतन अब यह टीम पूरी लगन से कार्य करे, यही मंगलकामना है। मुनिश्री ने बताया कि मैने ऐसा पहली बार किसी सभा को देखा है जिसकी पूरी केबिनेट टीम प्रतिदिन दर्शन सेवा का लाभ लेती है और किसी भी सभा का अध्यक्ष चरित्रात्माओं के पैदल विहार में सहभागी बनता है और लाडनूं तक जाता है। सभा के सभी पदाधिकारीगण, कार्यकारिणी सदस्य व पूरी टीम सेवा के क्षेत्र में गतिमान बने। आध्यात्मिक विकास के कार्य में गतिशीलता बढानी है। चाहे साधु-साध्वियों की सेवा हो, चाहे समाज की सेवा हो सबमें अपना सहयोग देना है। मुनि उपशम कुमार जी ने नवगठित टीम को बधाई दी और सभी को एक ही वाक्य में अपनी बात कही की टीम में सलाहकार तो बहुत होते है सहयोग बहुत कम होते है। हमें सलाहकार नहीं बनना है हमें सहयोगी बनना है। धर्मसंघ की हर गतिविधियों मे हमें सहयोग करना है। हमें टीम का सहयोग करना है ईर्षा की भावना नहीं रखनी है सभी के साथ प्रमोद भावना रखनी है। जैन महासभा बीकानेर के अध्यक्ष कन्हैयालाल बोथरा ने तेरापंथी सभा, गंगाशहर की नवगठित टीम को बधाई दी और कहा कि तेरापंथ समाज का हर व्यक्ति बहुत सहयोग देने वाला है। जैन महासभा के सभी आयमो में तेरापंथ समाज पुरा सहयोग प्रदान करे। नव मनोनीत अध्यक्ष नवरतन बोथरा पूरी अपनी सच्ची लगन से कार्य सम्पादित करे और जैन महासभा, बीकानेर के साथ भी अपना सहयोग बराबर बनाये रखे। तेरापंथी महासभा के संरक्षक जैन लूणकरण छाजेड़ ने पूरी टीम को बधाई दी और कहा कि शपथ ग्रहण करने वाले सभी कार्यकर्ता पदाधिकारियों को समाज के कार्यों में सहयोग करें। आचार्य तुलसी शान्ति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष गणेश बोथरा, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के आंचलिक प्रभारी भैरूदान सेठिया, तेरापंथ महिला मण्डल की अध्यक्ष प्रेम बोथरा, तेयुप के अध्यक्ष ललित राखेचा ने पूरी टीम को बधाई दी। सञ्चालन जतनलाल संचेती ने किया।

पृष्ठ 1 का शेष

युवा पीढ़ी अपनी शक्ति...

१. लांघने का दोष : साधु को मार्ग में सोते हुए किसी भी बड़े प्राणी, जैसे कुत्ता या सोते हुए बच्चे के ऊपर से उल्लंघन करके (लांघकर) नहीं जाना चाहिए। ऐसा करने वाला साधु प्रमादी माना जाता है। इसके साथ ही, भोजन करने, बात करने और वस्त्रों के प्रतिलेखन में बार-बार प्रमाद करना साधुत्व को दूषित करता है।

२. क्रोध पर नियंत्रण : जो साधु स्वभाव से 'चंड' (उग्र) होता है और गुस्से में आकर मर्यादा से अधिक बोलता है, वह सुश्रमण नहीं कहला सकता। जीवन में हमेशा शांति और समता का भाव रखने का प्रयास होना चाहिए।

42 की तपस्या का प्रत्याख्यान और किशोर अधिवेशन : सुधर्मा सभा शासन के गौरवमयी प्रसंगों और युवाओं के उत्साह की साक्षी बनी।

१. तपस्वी को वंदन : मंगल प्रवचन के उपरांत मुनि नमिकुमार जी ने पूज्य प्रवर के सम्मुख 42 उपवास (42 की तपस्या) का प्रत्याख्यान (पचक्खान) ग्रहण किया, जिस पर आचार्यश्री ने उन्हें हर्षोल्लास के साथ पावन मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

२. 21वाँ राष्ट्रीय किशोर अधिवेशन : अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वाधान में तेरापंथ किशोर मंडल के 21वें राष्ट्रीय अधिवेशन का भव्य मंचीय उपक्रम रहा। इस अवसर पर अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन माण्डोत, महामंत्री सौरभ पटावरी और किशोर मंडल के राष्ट्रीय प्रभारी मयंक धाकड़ ने अपनी सारगर्भित भावाभिव्यक्ति दी। अधिवेशन में किशोरों ने सुमधुर गीतों का संगान किया और सुंदर नाट्य प्रस्तुति दी।

३. किशोरों को पावन पाथेय : आचार्य प्रवर ने किशोरों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि यह पीढ़ी सुसंस्कारी बनी रहे, इसके लिए किशोरों पर ध्यान देना बेहद महत्वपूर्ण है। युवा पीढ़ी 'तेरापंथ प्रबोध' के माध्यम से आचार्य भिक्षु के जीवन वृत्त को समझे और संघ की सेवा में अपनी शक्ति व ज्ञान का सर्वश्रेष्ठ विनियोग करे। 'किशोर दिवस' के माध्यम से देश भर के अन्य किशोरों को भी इस आध्यात्मिक धारा से जोड़ने का प्रयास होना चाहिए।

शांत हो चुके विवाद...

रूखे और अस्वस्थ संतों की सेवा ही असली सदाचार : शांतिदूत ने गुरुकुलवास में सामंजस्य स्थापित करने और सेवा धर्म का मर्म सिखायाः

१. कठिनाई सहकर भी करें सेवा : जो साधु-साध्वी व्यवहार और प्रकृति से थोड़े रूखे हैं, उन्हें भी अपने पास स्थान देना और उनके साथ सामंजस्य बिठाना एक महान सेवा है।

२.सेवा की कमी से न हो असमाधि : संघ के वृद्ध, अस्वस्थ अथवा बीमार संत-साध्वियों की यथायोग्य सेवा-शुश्रूषा करना हर साधक का परम कर्तव्य है। हमारी सेवा में कोई ऐसी कमी नहीं रहनी चाहिए जिससे किसी बीमार संत को असमाधि (कष्ट) पहुँचे। बीमारों को आत्मिक सुख पहुँचाना ही धर्म है।

न्यारा में सफलता के तीन दिव्य महासूत्र : मुख्य गुरुकुलवास से अलग (न्यारा) क्षेत्रों में विचरने वाली चारित्रात्माओं को आचार्यश्री ने सफलता का पाथेय दिया।

१. आचार और मर्यादा के प्रति सजगता : गोचरी-पानी (आहार) और दैनिक चर्या में मर्यादा के प्रति पूर्ण जागरूकता ही सफलता का पहला सूत्र है। इसका आत्मा पर तो अच्छा प्रभाव पड़ता ही है, बाह्य समाज में भी शासन की प्रभावना होती है।

२. व्यवहार कुशलता और शालीनता : किसी भी सिंघाड़े (साधु-समूह) में आपस में गहरा सामंजस्य होना चाहिए। व्यवहार में सदाचार, मधुर पारस्परिकता और शालीनता बनी रहे। छोटों के मन में बड़ों के प्रति अगाध विनय हो और बड़ों का छोटों के प्रति वात्सल्य भाव होना चाहिए।

३. परिश्रम शीलता और क्षेत्र संभाल : चातुर्मास प्रारंभ होने से पूर्व के शेष काल में साधु-साध्वियों को छोटे क्षेत्रों, उपनगरों और देहातों में विचरकर धर्म की अलख जगानी चाहिए। अवसर देखकर श्रावकों के घरों का स्पर्श (संभाल) करना चाहिए ताकि चातुर्मास की गतिविधियों की सही प्रेरणा जन-जन तक पहुँच सके। मंगल प्रवचन के संपन्न होने पर पूज्य प्रवर आचार्यश्री ने उपस्थित चारित्रात्माओं द्वारा प्रस्तुत की गई तात्विक शंकाओं और जिज्ञासाओं का अत्यंत सरल शब्दों में समाधान किया।

पृष्ठ 12 का शेष

मुनि आत्मानंद जी को भावभीनी श्रद्धांजलिः हाजरी के पश्चात शुक्रवार को कालधर्म को प्राप्त हुए मुनि आत्मानंद जी की स्मृति सभा का गरिमापूर्ण उपक्रम हुआः

१. अचानक बिगड़ा स्वास्थ्य : पूज्य प्रवर ने परिचय देते हुए बताया कि वर्ष २०१३ में बीदासर के वृहद् दीक्षा समारोह में दीक्षित मुनि आत्मानंद जी अत्यंत स्वावलंबी और शांत चेतना के साधक थे। २८ मई २०२६ की रात्रि ११:४५ बजे भिक्षु विहार में उन्होंने अंतिम सांस ली।

२. चतुर्विध संघ ने किया ध्यान : आचार्यश्री ने दिवंगत मुनि की आत्मा के प्रति आध्यात्मिक मंगल कामना करते हुए चतुर्विध धर्म संघ सहित चार लोगस्स का सामूहिक ध्यान कराया। स्मृति सभा में मुख्य मुनि श्री महावीर कुमार जी, साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुत विभा जी, मुनि कमल कुमार जी, मुनि श्रेयांश कुमार जी और मुनि श्री के संसार पक्षीय पुत्र विनोद डागा ने अपनी गहरी भावाभिव्यक्ति व श्रद्धांजलि अर्पित की।

सघन साधना शिविर का भव्य समापन : जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वाधान में योगक्षेम वर्ष के अंतर्गत आयोजित नौ दिवसीय सघन साधना शिविर का मंचीय प्रस्तुतियों के साथ समापन हुआ। आचार्यप्रवर ने शिविर को बच्चों की 'सुंदर फुलवारी' बताते हुए मुख्य मुनि और साध्वी वर्या की कुशल व्यवस्थाओं को सराहा। समापन समारोह में मधु देरासरिया, बालिका ख्वाहिश पुगलिया, महासभा की ओर से डूंगरमल सालेचा और शिविरार्थी विपिन ने अपने अनुभव साझा किए तथा शिविरार्थी बालकों व बालिकाओं ने सुमधुर गीतों की सुंदर प्रस्तुतियां दीं।

❖ हर व्यक्ति के मन में कुछ होने की कामना हो। इसके लिए कुछ अपेक्षानुसार कठोर जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। जीवन में प्रतिस्रोतगामिता रहे।

❖ देश का भविष्य बच्चों पर निर्भर करता है। यदि बाल पीढ़ी अच्छी होगी तो देश का भविष्य भी सुनहरा बन सकेगा।

— आचार्य श्री महाश्रमण

बोलती किताब

गीता : संदेश और प्रयोग

सापेक्षवाद, प्रयोग और अनासक्ति का जीवन संदेश

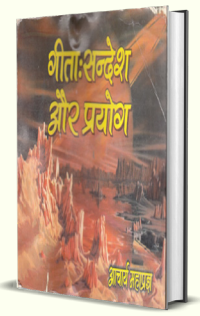

मैं जैन धर्म-दर्शन में दीक्षित हुआ हूँ, इसलिए अनेकांत का विचार मुझे एक प्रकार से विरासत में प्राप्त हुआ है। किंतु मैंने उसे केवल परंपरा के रूप में स्वीकार नहीं किया, बल्कि आधुनिक संदर्भों में समझने और परखने का प्रयास किया है। अनेकांत के दो प्रमुख आधार-स्तंभ हैं—सापेक्षवाद और संभावनावाद। इन दोनों को समझने पर यह स्पष्ट होता है कि सत्य एकांगी नहीं होता, बल्कि अनेक दृष्टियों से देखा और समझा जा सकता है। यही दृष्टि जीवन में सहिष्णुता, समन्वय और व्यापकता को जन्म देती है। इस दृष्टिकोण को हृदयंगम करने से यह अनुभव होता है कि संसार के अनेक विरोधाभास वास्तव में परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि सापेक्ष रूप से एक-दूसरे के पूरक हैं।

मेरी दृष्टि में गीता अनेकांत दर्शन का एक अत्यंत सुंदर और गहन ग्रंथ है। जैन आचार्यों—जैसे आचार्य सिद्धसेन ने सन्मतितर्क में और आचार्य समंतभद्र ने आप्तमीमांसा में—नयवाद का अत्यंत सूक्ष्म विवेचन किया है, जिससे वे दार्शनिक ग्रंथ बन गए। गीता भी आध्यात्मिकता और दर्शन का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करती है। इसमें नयदृष्टि का उपयोग प्रत्येक स्तर पर दिखाई देता है, इसलिए यह द्वैतवादी और अद्वैतवादी दोनों के लिए आधारभूत ग्रंथ बन जाती है। द्वैत और अद्वैत पहली दृष्टि में विरोधी प्रतीत होते हैं, परंतु वास्तव में उनमें कोई वास्तविक विरोध नहीं है; वे सापेक्ष रूप से एक-दूसरे के पूरक हैं। अद्वैत के बिना द्वैत की कल्पना नहीं की जा सकती और द्वैत के बिना अद्वैत की भी नहीं। यह विरोधी युगल ही भाषा, विचार और दर्शन की संरचना को संभव बनाता है।

गीता में योगिराज कृष्ण ने जिस प्रकार जगत् के स्वरूप का वर्णन किया है, उसमें सापेक्षवाद की स्पष्ट झलक मिलती है। वे कहते हैं कि यह समस्त जगत् अव्यक्त रूप से मुझसे व्याप्त है, सभी भूत मुझमें स्थित हैं, किंतु मैं उनमें स्थित नहीं हूँ। आगे वे यह भी कहते हैं कि वास्तव में भूत मुझमें स्थित भी नहीं हैं—यह मेरा ऐश्वर्य योग है। यह कथन पहली दृष्टि में विरोधाभासी प्रतीत होता है, किंतु सापेक्ष दृष्टि से देखने पर यह गहन सत्य का उद्घाटन करता है।

वर्तमान युग की एक बड़ी समस्या ज्ञान और आचरण के बीच की दूरी है—कथनी और करनी का अंतर। बुराई को बुरा जानने वाले लोग बहुत हैं, परंतु उसे छोड़ने वाले कम हैं। इसका कारण यह है कि ज्ञान और आचरण के बीच जो मध्यवर्ती सेतु होना चाहिए, वह प्रायः अनुपस्थित है। गीता इस समस्या का समाधान प्रस्तुत करती है, क्योंकि वह केवल सिद्धांत का ग्रंथ नहीं, बल्कि प्रयोग का ग्रंथ भी है। जीवन को केवल सिद्धांत नहीं, बल्कि प्रयोग अधिक प्रभावित करते हैं। गीता का सार या नवनीत है—अनासक्ति योग। योगिराज कृष्ण कहते हैं कि मैं उदासीन की भाँति स्थित हूँ, कर्मों में आसक्त नहीं हूँ, इसलिए कर्म मुझे बाँध नहीं पाते।

इस पुस्तक को ऑनलाइन पढ़ने के लिए
अभी डाउनलोड करें
सम्बोधि ई-लाइब्रेरी ऐप्प
Sambodhi E-Library
SCAN HERE
Readable & Audible Mobile Application

पुस्तक प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
आदर्श साहित्य विभाग,
जैन विश्व भारती लाडनूं
+91 87420 04849
books.jvbharati.org
books@jvbharati.org

ज्ञानशाला बच्चों का पुरस्कार समारोह सम्पन्न

केजीएफ।

आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी संयमलताजी आदि ठाणा-4 के पावन सानिध्य में आज तेरापंथ सभा भवन, KGF में ज्ञानशाला के मेधावी बच्चों का पुरस्कार वितरण समारोह उल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ। साध्वीश्रीजी ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में फरमाया कि बच्चे भावी पीढ़ी की नींव होते हैं। यदि बच्चे संस्कारित होते हैं तो घर, परिवार और देश स्वयं ही श्रेष्ठ बन जाता है। उन्होंने आचार्य श्री तुलसी की दूरदर्शिता को नमन करते हुए कहा कि ज्ञानशाला का उपक्रम शुरू कर बच्चों को संस्कारित करने का अमूल्य मार्गदर्शन दिया। आज की भागदौड़ भरी ज़िन्दगी और AI के इस युग में भी माता-पिता अपने बच्चों को ज्ञानशाला भेजकर धर्म के मार्ग को पुष्ट कर रहे हैं, यह अत्यंत सराहनीय है,' साध्वीश्रीजी ने हर्ष व्यक्त किया। उन्होंने अभिभावकों से कहा कि बच्चों को मोबाइल से दूर कर धर्म-अध्ययन से जोड़ें, तभी संस्कारों की जड़ें मजबूत होंगी।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
08 जून - 14 जून 2026

संस्कार देने वाले गुरु का उपकार भूलना साधुत्व नहीं, नारियल की तरह प्रतिफल देना ही सज्जनता : आचार्यश्री महाश्रमण

सुधर्मा सभा में अनुयोगद्वारम् की अंग्रेजी पुस्तक का लोकार्पण; आचार्यश्री ने बिना सांसारिक संबंधों के भी दूसरों की सेवा के लिए तत्पर रहने की दी सीख

लाडनूं।
27 मई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अखंड परिव्राजक, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में 'पूज्य प्रवर के साथ कैसा व्यवहार' विषय पर उत्तरज्झयणाणि सूत्र के माध्यम से ऐतिहासिक अमृत देशना प्रदान की। आचार्यश्री ने जैन शासन में आचार्य और उपाध्याय पद की गरिमा को रेखांकित करते हुए तेरापंथ धर्मसंघ की अनूठी व सुदृढ़ शासन व्यवस्था पर विशेष प्रकाश डाला।

तेरापंथ का अद्वितीय इतिहास और सातों पदों का विलीनीकरण: आचार्य प्रवर ने संघ की प्रशासनिक व्यवस्था और गुरु भिक्षु के सिद्धांतों को समझाते हुए मुख्य बिंदु रेखांकित किए:

१. आचार्य में विलीन उपाध्याय पद : जैन शासन में आचार्य और उपाध्याय अत्यंत महत्वपूर्ण चारित्रात्माएं हैं। तेरापंथ धर्मसंघ में अलग से कोई उपाध्याय पद मनोनीत नहीं होता, बल्कि उपाध्याय का संपूर्ण दायित्व आचार्य में ही समाहित है।

२. आचार्य भिक्षु की अटूट वाणी : परम पूज्य आदि पुरुष आचार्य श्री भिक्षु ने फरमाया था कि संघ के सातों पदों का दायित्व मैं स्वयं संभालता हूँ। उनकी वह दिव्य वाणी आज तक फलित हो रही है और तेरापंथ के इतिहास में आज भी सातों पद आचार्य में ही सन्निहित हैं।

३. अंतिम जिम्मेदारी आचार्य की : हमारे संघ की व्यवस्था में आचार्य को असीम अधिकार और व्यवस्थागत जिम्मेदारी दी गई है। यद्यपि इतिहास में जयाचार्य ने व्यवस्थागत जिम्मेदारी युवाचार्य मधवा को सौंपकर स्वयं को थोड़ा हल्का किया था, तथापि पद पर रहते हुए अंतिम और मुख्य जिम्मेदारी हमेशा आचार्य की ही रहती है।

> संघ में सातों पदों का दायित्व आज भी आचार्य में ही समाहित
> -आचार्यश्री महाश्रमण

उपकारी की अवहेलना और नारियल का दृष्टांत : शांतिदूत ने शिष्यों को संस्कार देने वाले गुरु के प्रति कृतज्ञ रहने का व्यावहारिक पाठ पढ़ाया।

१.अपवित्र है गुरु निंदा करने वाला : जो आचार्य और उपाध्याय अपने शिष्यों को ज्ञान, विनय और संस्कार देकर उपकार करते हैं, उनकी पीठ पीछे बुराई या अवज्ञा करने वाला साधु 'पाप श्रमण' कहलाता है। उपकारी की अवहेलना करने वाला मनुष्य अपवित्र होता है।

२. नारियल का जीवंत उदाहरण : जिस प्रकार नारियल के पेड़ को शुरुआत में जड़ से पानी का सिंचन मिलता है, तो वह बाद में फल के रूप में मीठा पानी प्रतिफल देता है; ठीक वैसे ही सच्चे साधु और सज्जन पुरुष किसी के किए उपकार को कभी नहीं भूलते।

३. विनय और सेवा का भाव : गुरु और माता-पिता की सेवा करना परम कर्तव्य है। इसके साथ ही, यदि अपेक्षित हो तो बिना किसी सांसारिक संबंध के भी दूसरों की सेवा के लिए तत्पर रहना चाहिए। साधु-साध्वियों को सदा सद्गुण संपन्न होना चाहिए।

अंग्रेजी पुस्तक का लोकार्पण एवं जिज्ञासा समाधान : मंगल प्रवचन के विशेष प्रसंग में आज आचार्यश्री की पावन सन्निधि में 'अनुयोगद्वारम्' आगम की अंग्रेजी में अनूदित पुस्तक का गरिमापूर्ण लोकार्पण हुआ। इस अवसर पर डॉ. अनुपम जैन ने अपनी सारगर्भित अभिव्यक्ति दी, जिन्हें आचार्य प्रवर ने मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। आचार्यश्री ने डॉ. जैन द्वारा लिखित 'जैन गणित' पुस्तक के संदर्भ में भी समाज को मंगल प्रेरणा दी। कार्यक्रम के अंत में सघन साधना शिविर के शिविरार्थियों ने आराध्य के समक्ष अपनी जिज्ञासाएं रखीं, जिनका गुरुदेव ने सरल समाधान कर उन्हें कृतार्थ किया।

भीतर के भाव भले ही पवित्र हों, पर दुनिया केवल बाह्य भाषा और व्यवहार की कटुता देखती है : आचार्यश्री महाश्रमण

'कैसे बैठें' विषय पर युगप्रधान की सूक्ष्म अमृत देशना; रजोहरण और प्रमार्जनी को बताया जीव हिंसा से बचाव का सबसे बड़ा सुरक्षा कवच

लाडनूं।
28 मई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, तीर्थंकर के प्रतिनिधि, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में 'कैसे बैठें' विषय उत्तरज्झयणाणि आगम के माध्यम से पावन प्रतिबोध प्रदान किया। आचार्यश्री ने सुश्रमण और पाप श्रमण के भेदों को स्पष्ट करते हुए काया, वचन और उठने-बैठने की चर्या में अहिंसा व पूर्ण सजगता बरतने के व्यावहारिक सूत्र दिए।

अहिंसा का सूक्ष्म विज्ञानः प्रतिलेखन और प्रमार्जन : आचार्य प्रवर ने साधु चर्या के सूक्ष्म नियमों को समझाते हुए मुख्य बिंदु रेखांकित किए।

१. बिना प्रमार्जन बैठना दोष : बिछौना, कम्बल, आसन आदि पर बिना पूंजे बैठ जाना प्रमाद की निशानी है। आगम के अनुसार, बिना प्रमार्जन किए बैठने वाला साधु 'पाप श्रमण' की कोटि में आता है। हर साधक को देखकर और पूंजकर ही आसन ग्रहण करना चाहिए।

> लोलुपता छोड़ गृहस्थ के यहाँ जो सहज मिले उसे ग्रहण करें, गोचरी में दोष लगे तो तुरंत लें आलोयणा
> -आचार्यश्री महाश्रमण

२. करवट बदलने में भी सजगता : जीव हिंसा से संपूर्ण बचाव के लिए ही साधु जीवन में रजोहरण और प्रमार्जनी का विधान है। सामान्यतया साधु को गृहस्थ के घर बैठना नहीं चाहिए। यदि विश्राम के समय लेटना हो और करवट भी बदलनी पड़े, तो पहले प्रमार्जनी से भूमि को अच्छी तरह पूंज कर ही करवट बदलनी चाहिए।

३. ईर्या समिति का पालन : मार्ग पर चलते समय साधु को शरीर प्रमाण भूमि (चार हाथ आगे) को देखते हुए चलना चाहिए। चलते समय आपस में वार्तालाप करने से बचना चाहिए। यदि चलते समय कोई टोके और साधु तुरंत उत्तर दे, तो यह भी चर्या की कमी है।

भाषा की शुद्धि और एषणा समिति के नियम : शांतिदूत ने कषाय मंदता के साथ-साथ व्यवहारिक गोचरी और भाषा की मर्यादा पर विशेष प्रकाश डाला।

१. भाषा और व्यवहार का महत्व : साधु की भाषा हमेशा यथार्थ से ओत-प्रोत और कटुता से रहित होनी चाहिए। कई बार भीतर का भाव ठीक होता है, लेकिन बाहर देखने वाला व्यक्ति केवल बाह्य व्यवहार और भाषा को ही देख पाता है। इसलिए वचन और काया पर यथायोग्य ध्यान देना आवश्यक है।

२. निर्दोष गोचरी और ऊनोदरी : श्रावक के घर गोचरी (भिक्षा) के समय लोलुपतावश कोई इशारा नहीं करना चाहिए। जो कुछ भी सहज रूप से मिल जाए, उसे सहर्ष स्वीकार करना चाहिए। सामुदायिक गोचरी करना और जीवन में ऊनोदरी (भूख से कम खाना) का प्रयोग करना श्रेष्ठ साधना है। यदि गोचरी में अनजाने में कोई दोष लग जाए, तो उसकी तुरंत गुरु के समक्ष आलोयणा ले लेनी चाहिए।

जिज्ञासा समाधान का सत्र : मंगल देशना के संपन्न होने पर पूज्य प्रवर आचार्यश्री ने उपस्थित चारित्रात्माओं की गंभीर तात्विक जिज्ञासाओं का आगम के आलोक में समाधान किया। इसके पश्चात, लाडनूं चातुर्मास स्थल पर चल रहे सघन साधना शिविर के देश-विदेश से आए शिविरार्थियों को भी अपने आराध्य के सम्मुख शंकाएं रखने का पावन अवसर मिला, जिनका गुरुदेव ने अत्यंत सरल शब्दों में निवारण कर सबको कृतार्थ किया।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

आत्म-आलोचन और खमतखामणा

विनम्रता, ऋजुता, लघुता और सहिष्णुता– ये महानता के चार स्तम्भ हैं। महान् वह होता है, जो आत्म-निरीक्षण, आत्मालोचन और आत्म-परिष्कार करता है। आचार्य भिक्षु प्रारम्भ से ही महान् थे। अन्तिम समय में उनकी महानता और अधिक निखर गई।

संवत्सरी का महान् पर्व सम्पन्न हुआ। आचार्य भिक्षु ने आत्मालोचन किया और सबके साथ खमतखामणा कर अपने आप को हल्का बना लिया। उन्होंने कहा–

- प्राणीमात्र से राग-द्वेष की लहर के लिए खमतखामणा करता हूं।
- कुछ शिष्य सुविनीत हुए और कुछ अविनीत। उन्हें कठोर वचन से शिक्षा दी, उनसे खमतखामणा करता हूं।
- कुछ श्रावक-श्राविकाओं को भी कठोर वचन से शिक्षा दी, उसके लिए खमतखामणा करता हूं।
- चार तीर्थ संचालन करने के लिए शिक्षाएं दी, उससे किसी को अप्रिय लगा हो तो खमतखामणा करता हूं।

स्थानकवासी साधुओं तथा अन्य साधुओं से अनेक बार चर्चाएं कीं। उनका नाम ले-लेकर कहा– मैं उन सबसे खमतखामणा करता हूं।

अपने गण से निकले, अनुकूल या प्रतिकूल रहने वाले, साधु-साध्वियों का नाम ले-लेकर कहा– मैं उन सबसे खमतखामणा करता हूं।

गण से निकले हुए चन्द्रभाणजी और तिलोकचन्दजी उस समय थली प्रदेश में थे। उनसे खमतखामणा किया और साधुओं से कहा– उनसे बहुत काम पड़ा है, इसलिए वे जब मिलें तब मेरी ओर से खमतखामणा कह दें।

इस प्रकार अपनी अन्तर् आत्मा को खोल उन्होंने सब शल्यों को भर दिया। वे निःशल्य होकर अंतिम क्षण की प्रतीक्षा करने लगे।

साप्ताहिक प्रेरणा
प्रतिदिन 30 मिनिट मौन रहे।

क्या आप जानते हैं?

बाजरी के आटे तथा न सेके हुए मूंगफली के गोटे को सचित्त माना जाए।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

भिक्षु की कहानी जयाचार्य की जुबानी

घी सहित घाट वापस ले ली

संवत् १८५५ आषाढ़ मास की घटना है। स्वामीजी बहुत साधुओं और साध्वियों के साथ विराज रहे थे। साध्वी अजबूजी गोचरी के लिए गई। किसी ने घी का दान दिया। दूसरे घर में एक बहिन ने 'घाट' (दलिया) का दान देकर पूछा– 'तुम किस टोले की साध्वी हो ?'

तब साध्वी अजबूजी ने कहा– 'हम भीखणजी स्वामी के टोले की हैं।' तब वह बहिन देती हुई बोली– 'पिछली बार भी तुम मेरे घर से रोटी ले गई थी। (आज फिर आ गई) मेरी 'घाट' मुझे वापस दे दो।' यह कहकर वह घाट वापस लेने लगी, तब एक व्रजवासिनी ने उसे बरजा– 'हे कीकी! 'अतीत' साधु को दिया हुआ दान वापस मत ले।'

तब वह बोली– कुत्तों को खिला दूंगी, पर इसके पास से तो वापस ले लूंगी। यह कहकर उसने जबरदस्ती वह घाट घी सहित वापस ले ली।

अजबूजी ने स्वामीजी के पास आकर यह सारी घटना सुनाई।

तब स्वामीजी बहुत विमर्श कर बोले– 'यह कलिकाल है। इसमें ऐसा हो सकता है। कुछ लोग दान नहीं देते, कुछ लोग देने से इंकार कर देते हैं और कुछ लोग जानबूझ कर अशुद्ध (जिसके हाथ से भिक्षा ग्राह्य नहीं होता वैसा) हो जाते हैं। परंतु दान देने के बाद वापस लेने की बात पहले नहीं सुनी। यह तो कोई नई बात हुई है।'

व्रजवासिनी ने इस बात को गांव में फैला दिया।

उस (कीकी) के पति को लोग कहने लगे– दूकान पर तो तुम कमाते हो और घर में तुम्हारी स्त्री कमा रही है। यह सुनकर वह भी मन में लज्जित होता है। कुछ दिनों बाद 'रक्षा-पूर्णिमा' के दिन अकस्मात् उसका पुत्र चल बसा और कुछ दिनों बाद 'कीकी' का पति भी मर गया। तब शोभजी श्रावक ने एक तुक्का रचा–

'तू बादरशाह की पुत्री है। कीकी तेरा नाम है।
तूने घी सहित घाट वापस ले ली, पात्र को खाली कर दिया।'

कुछ समय बाद उसी बहिन (कीकी) के घर साधु गोचरी गए। वह साधुओं को देने लगी। साधुओं ने पूछा– 'तुम्हारा नाम क्या है ?'

तब वह बोली– 'मैं वही पापिनी कीकी हूं, जिसने साध्वियों के पात्र से घाट वापस ली थी। कोई तो पाप का फल परभव में देखता है। मैंने तो वह इसी जन्म में देख लिया।' यह कहकर वह पछताने लगी।

जानें तेरापंथ को पहचाने स्वयं को

अनुयायी और श्रावक

सुनने में तो दोनों शब्दों में बहुत ज्यादा फर्क नहीं लगता, किंतु अर्थ की दृष्टि से बहुत अंतर है। प्रचलन में सबको श्रावक ही बोल देते हैं, किंतु क्या सभी श्रावक है? यह विमर्शणीय है। आइए समझते हैं दोनों शब्दों की गहराई को। दोनों में फर्क को, अनुयायी वह होता है जो अनुगमन करता हो या यों समझे कि वह सत्य को तथ्य को सिर्फ मानता हो जानता न हो। अर्थात् वह सिर्फ पथ पर चल रहा है, नियमों आदि का स्वीकरण विशेष रूप से न किया हुआ हो। श्रावक वह होता है जो समझ पूर्वक नियमों का स्वीकरण किया हो। तत्त्वों को समझता हो। 12 व्रतों को समझने वाला व उनकी पालना करने वाला। जीव-अजीव को मानने वाला, आत्मा, कर्म आदि को मानने वाला, देव-गुरु-धर्म के प्रति श्रद्धा रखने वाला। श्रावक तो चार तीर्थ में से एक है। श्रावक को माता-पिता तक की उपमा दी गई है। श्रावक पांचवे गुणस्थान में आता है, अनुयायी पांचवे स्थान में आ सकता है, नहीं भी। श्रावक की मुक्ति देर-सवेर निश्चित है, अनुयायी के लिए कुछ कहना मुश्किल है। अस्तु यह फर्क हम समझें व श्रावकत्व में अपने आप को नियोजित करें।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
08 जून - 14 जून 2026

मकान, जमीन या सोना-चांदी स्वयं नहीं कराते कर्मों का बंधन, भीतर की मूर्च्छा ही है असली परिग्रह : आचार्यश्री महाश्रमण

मुनि आत्मानंद जी के देवलोकगमन पूज्य गुरुदेव व मुख्यमुनि ने दी भावभीनी श्रद्धांजलि

लाडनूं।
30 मई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अखंड परिव्राजक, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में 'मूर्च्छा परिग्रह है' विषय पर आगम के आलोक में गंभीर दार्शनिक अमृत देशना प्रदान की। इसके साथ ही प्रथम ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी के पावन अवसर पर मर्यादा पत्र (हाजरी) का सामूहिक वाचन हुआ तथा दिवंगत मुनि श्री आत्मानंद जी की स्मृति सभा आयोजित हुई।

पदार्थ नहीं, आसक्ति का भाव ही असली परिग्रह : आचार्य प्रवर ने अपरिग्रह महाव्रत की सूक्ष्मताओं को समझाते हुए मुख्य बिंदु रेखांकित किए।

१. पुद्गल नहीं कराता कर्म बंध : दुनिया में घर, मकान, संपत्ति, सोना-चांदी, आभूषण और नकद राशि आदि बाह्य परिग्रह हैं। ये जड़ पदार्थ स्वयं कभी कर्मों का बंधन नहीं करा सकते क्योंकि ये पुद्गल हैं। कर्म का असली बंधन तब होता है जब इन पदार्थों के साथ आत्मा में मूर्च्छा (आसक्ति) का

> विहार या सेवा केंद्रों में भी सभी चारित्रात्माएं एक जगह एकत्रित होकर अवश्य करें हाजरी का वाचन
> –आचार्यश्री महाश्रमण

भाव जुड़ जाता है।

२. अनासक्ति की चेतना : तीनों लोक में साधु के मालिकाना हक में कोई मकान या जमीन न होना बहुत ऊंची बात है। साधु वस्त्र और पात्र का उपयोग तो करता है, पर उसका भी कड़ा सीमाकरण होता है। साधक को कांता-कंचन के भ्रमर में न फंसकर पूरी तरह अनासक्त रहना चाहिए, क्योंकि आसक्ति ही महाव्रत में बाधा है।

हाजरी का नियम : न्यारे और सेवा केंद्रों में भी हो वाचन मर्यादा पत्र की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए शांतिदूत ने निर्देश दिया।

१. सामूहिक मर्यादा का वाचन : हाजरी का क्रम केवल मुख्य गुरुकुलवास तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि न्यारा (अगल-अलग स्थानों) में रहने वाले साधु-साध्वियों में भी यह नियम अनिवार्य रूप से चलना चाहिए।

२. अपरिहार्य नियम : विहार के समय यदि श्रावकों की उपस्थिति न भी हो, तब भी समय मिलते ही सभी चारित्रात्माओं को एक स्थान पर एकत्रित होकर हाजरी का वाचन कर लेना चाहिए। जिन सेवा केंद्रों में व्याख्यान आदि नहीं होते, वहाँ भी इस मर्यादा क्रम को संपन्न किया जाए। पाथेय के पश्चात सभी चारित्रात्माओं ने खड़े होकर लेख पत्र उच्चारित किए। (शेष पेज 9 पर)

अर्हम्

मुनिश्री आत्मानन्दजी (श्रीडूंगरगढ़) का देवलोकगमन

जीवन परिचय

जन्म :	वि.सं. 1990 आषाढ शुक्ल 11 को श्रीडूंगरगढ़ के डागा परिवार में हुआ
पिता :	श्री चुन्नीलाल जी जागा
माता :	श्रीमती रूपादेवी
पत्नी :	श्रीमती इन्द्रादेवी
दीक्षा :	वि.सं. 2070 मार्गशीर्ष कृष्णा 10 को आचार्य श्री महाश्रमण जी ने बृहद् दीक्षा महोत्सव बीदासर में दीक्षा दी।
विशेष :	वि.सं. 2074 से छापर सेवा केन्द्र में। 1 वर्षीतप उसी में 9 की लड़ी, प्रतिदिन 8 से 9 घंटा मौन। प्रायः स्वावलम्बी जीवन था।
बक्शीष :	वि.सं. 2079 छापर चार्तुमास में आचार्य श्री महाश्रमण जी ने चाकरी की बक्शीष दी।
स्वर्गवास/देवलोक गमन :	28 मई 2026 गुरुवार, लगभग 11 बजकर 45 मिनट पर जैन विश्व भारती लाडनूं में।

योगक्षेम वर्ष चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - पवन एच जैन द्वारा मै.आर.डी. प्रिंटर्स एण्ड पब्लिसर्स प्राइवेट लिमिटेड बी 48, सेक्टर 8, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश - 201301 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।